दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

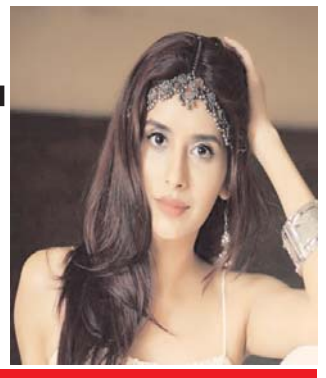

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 250 | ग्वालियर, शुक्रवार, 30 जून 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

एक नजर...

दिल्ली कैबिनेट में फेरबदल, आतिशी को वित्त और राजस्व मंत्रालय भी सौंपे गए

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार में आतिशी का कद बढ़ गया है. सूत्रों के अनुसार, उपराज्यपाल ने केजरीवाल की कैबिनेट में फेरबदल को मंजूरी दे दी है. आतिशी को अब वित्त और राजस्व मंत्रालय की भी जिम्मेदारी मिल गई है. वहीं, दिल्ली सरकार के मुताबिक अभी तक उनके पास मंत्रिमंडल फेरबदल की फाइल एलजी से लौटकर नहीं आई है. आपको बता दें कि मनीष सिसोदिया के जेल जाने के बाद आतिशी शिक्षा मंत्री बनाई गई थीं. सीएम अरविंद केजरीवाल की ओर से उपराज्यपाल वीके सक्सेना को दिल्ली कैबिनेट में फेरबदल के प्रस्ताव की फाइल भेजी गई थी. इस पर एलजी ने मंत्रिमंडल में फेरबदल के प्रस्ताव पर मुहर लगा दी है. इसके बाद आतिशी के पास शिक्षा मंत्रालय के साथ वित्त और राजस्व मंत्रालय भी आ गए हैं. हालांकि, दिल्ली सरकार ने कहा कि एलजी कार्यालय से अबतक मंत्रिमंडल के विभागों के फेरबदल की फाइल अभी तक नहीं मिली है. गौरतलब है कि इसी साल मार्च के महीने में पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया और पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन के जेल जाने के बाद आतिशी और सौरभ भारद्वाज को दिल्ली सरकार की कैबिनेट में शामिल किया गया था. उस वक्त आतिशी को शिक्षा, पीडब्ल्यूडी, महिला एवं बाल विकास, ऊर्जा, आर्ट कल्चर व भाषा और टूरिज्म कुल छह विभागों की जिम्मेदारी मिली थी और सौरभ भारद्वाज को हेल्थ, अर्बन डेवलपमेंट, जल, सिंचाई व बाढ़ नियंत्रण, विजिलेंस, सर्विसे और इंडस्ट्री कुल 7 मंत्रालय सौंपे गए थे.

दिल्ली-यूपी समेत देश के शहरों में आसमान पर पहुंचे टमाटर के दाम

नई दिल्ली। देश के कई शहरों में टमाटर की कीमतों में अचानक से हुई भारी बढ़ोतरी हुई है. दिल्ली से लेकर बेंगलुरू तक टमाटर के दाम आसमान छू रहे हैं. आमतौर पर टमाटर की कीमत 20 से 30 रुपये प्रति किलोग्राम तक होती है लेकिन अब ये कई शहरों में 100 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई हैं. मंगलवार को देश की कई थोक सब्जी मंडियों में टमाटर की कीमत 100 रुपये प्रति किलो पहुंच गई. जबकि टमाटर का फुटकर दाम 130 से 140 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया है. राजधानी दिल्ली में टमाटर के दाम 80 रुपये प्रति किलोग्राम हो गए तो वहीं कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु ने सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए. बेंगलुरु में टमाटक का भाव 100 रुपये प्रति किलो पहुंच गया. उधर मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में टमाटर के दाम 80 से 100 रुपये के बीच पहुंच गए हैं. जबकि इंटौर में भी टमाटर 80 से 100 रुपये प्रति किलोग्राम मिल रहा है. उत्तर प्रदेश और पंजाब में भी टमाटर ने लोगों को लाल कर दिया है. दोनों राज्यों में टमाटर की कीमत 100 रुपये प्रति किलोग्राम पहुंच गई है.बता दें कि बारिश का मौसम आते ही सभी सब्जियों की कीमतें बढ़ने लगती हैं. क्योंकि बारिश के चलते ज्यादातर सब्जियां खराब हो जाती है. जिसके चलते थोक सब्जी मंडी में भी सब्जियों की कीमतें आसमान पर पहुंच जाती हैं. मॉनसून की पहली बारिश ने देश के ज्यादातर हिस्सों को अपने आगोश में ले लिया. ऐसे में कई इलाकों में सब्जियां खराब हो गई. जिसके चलते सब्जियों की कीमतों में इजाफा होने लगा है. लेकिन सबसे ज्यादा कीमतें टमाटर की बढ़ी हैं जो अचानक से चार से पांच गुना तक बढ़ गई हैं. सब्जी बिक्रेताओं का कहना है कि बरसात के मौसम में लोकल टमाटर खत्म हो गया या फिर बारिश से सड़ गया. ऐसे में उन्हें बाहर से टमाटर मंगवाना पड़ रहा है. जिसकी लागत स्थानीय टमाटर से ज्यादा पड़ती है. इसी के चलते टमाटर के दाम अचानक से बढ़ गए हैं. बारिश के अलावा चक्रवाती तूफान बिपरजॉय के चलते भी टमाटर की कीमतों पर असर पड़ा है. बता दें कि कई राज्यों में बेमौसम बारिश तो कई राज्यों में पड़ी भीषण गर्मी से टमाटर की फसल को नुकसान पहुंचा है और इसकी पैदावार में गिरावट दर्ज की गई है. गौरतलब है कि टमाटर की सबसे अधिक पैदावार वाले राज्यों में गुजरात और महाराष्ट्र शामिल हैं, जहां चक्रवाती तूफान बिपरजॉय का सबसे ज्यादा प्रकोप देखने को मिला.

चीन और पाकिस्तान पर विदेश मंत्री का बड़ा बयान

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बुधवार को एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए चीन और पाकिस्तान पर जमकर निशाना साधा है. उन्होंने पाकिस्तान के बारे में बोलते हुए कहा कि हम आतंकवाद को सामान्य नहीं होने दे सकते हैं, हम उसे पाकिस्तान के साथ चर्चा का आधार नहीं बनने दे सकते हैं. पाकिस्तान की ओर से सीमा पार से आतंकवाद की नीति के रहते हुए सामान्य संबंध होना बिल्कुल संभव नहीं है. चीन के साथ संबंधों पर विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने कहा कि उच्च स्तर की पारस्परिकता पर कोई भी संबंध आधारित होना चाहिए. एक-दूसरे के हितों का समझौता और सम्मान का पालन किया जाना चाहिए, लेकिन चीन के साथ ऐसा नहीं है, हम आज चीन के साथ संबंधों के कठिन दौर में हैं. देशों के बीच संबंध बॉर्डर की स्थिति का निर्भर करते हैं और चीन के साथ बॉर्डर की स्थिति आज भी असामान्य है. आपको बता दें कि चीन के साथ संबंधों में सुधार को लेकर एस जयशंकर पहले भी बोल चुके हैं. उन्होंने इसी महीने की शुरुआत में कहा था कि चीन के साथ संबंध में सुधार के लिए बार्डर पर शांति और अमन-चैन जरूरी है, तभी जाकर भारत और चीन के बीच संबंध सुधरने की संभावना है. भारत के संबंध में चीन को छोड़कर दुनिया से अच्छे हुए हैं.

मणिपुर दौरे पर पहुंचे राहुल गांधी

पीड़ितों से मुलाकात करने से पहले पुलिस ने रोका

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी गुरुवार को मणिपुर में हिंसाग्रस्त इलाके में पीड़ितों से मुलाकात करने जा रहे थे. इससे पहले राहुल गांधी को स्थानीय पुलिस ने रोक लिया. सुरक्षा कारणों की वजह से राहुल गांधी को रोक लिया गया. राहुल गांधी को इंफाल एयरपोर्ट के आगे विष्णुपुर चेकपोस्ट पर रोका गया. इंफाल एयरपोर्ट पर उतरने के बाद वे चुराचांदपुर जा रहे थे, लेकिन मुताबिक राहुल गांधी के काफिले को सुरक्षा कारणों से रोका गया है. मीडिया जानकारी के मुताबिक, राहुल गांधी दो दिनों के दौरे पर मणिपुर पहुंचे हैं. वह हिंसाग्रस्त राज्य में राहत शिविरों पीड़ितों से मुलाकात करेंगे और दुख-दर्द को समझेंगे. इसके साथ ही उनका इंफाल और चुराचांदपुर में सिविल सोसायटी के प्रतिनिधियों से भी मिलेंगे. हालांकि, राहुल गांधी को इससे पहले स्थानीय पुलिस ने रोक लिया है. गौरतलब है कि मणिपुर में मैतेई और कुकी समुदाय के बीच हिंसक आंदोलन जारी है. आरक्षण को लेकर दो समुदाय के लोग आपस में भिड़े हुए हैं. राज्य के कई इलाकों में हिंसक झड़पें हो चुकी हैं. अभी तक 100 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है. वहीं, सैकड़ों लोग अपना घरबार छोड़कर राहत शिविर कैंपों में शरण लिए हुए हैं. इससे पहले इसी महीने की शुरुआत केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने मणिपुर का भी दौरा किया था. उम्मीद जताई जा रही थी अमित शाह के दौरे के बाद राज्य में शांति स्थापित होगी, लेकिन अभी तक राज्य हिंसा की आग में जल रहा है.

शिमला में नहीं इस शहर में होगी विपक्षी दलों की बैठक, 13 और 14 जुलाई को जुटेंगे नेता

नई दिल्ली। 24 जून को पटना में विपक्षी दलों की बैठक आयोजित की गई थी. करीब चार घंटे तक चली बैठक में 18 दलों के नेता शामिल हुए थे. इसमें कांग्रेस, जेडीयू, राजद, टीएमसी, आप, डीएमके, राकंपा समेत कई अन्य विपक्षी दलों ने हिस्सा लिया था. एनसीपी सुप्रीमो शरद पवार ने जगह बदलने की जानकारी दी. गुरुवार को पुणे में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए शरद पवार ने कहा कि शिमला में होने वाली बैठक स्थगित कर दी गई है. इसकी जगह बेंगलुरु में 13-14 जुलाई को सभी विपक्षी दलों के नेता एक साथ बैठक करेंगे. शरद पवार ने इस दौरान बीजेपी को भी आड़े हाथ लिया. पवार ने कहा कि बीजेपी सत्ता में बने रहने के लिए किसी के साथ ही हाथ मिला सकती है. बीजेपी अगर सत्ता से बाहर हो जाती है तो उसकी बेचैनी बढ़ जाती है. बता दें कि पटना में आयोजित हुई बैठक में कॉमन मिनिमम प्रोग्राम के तहत चुनाव लड़ने पर सभी दलों ने सहमति जताई थी. साथ ही तय हुआ था कि 13 जुलाई को शिमला में बैठक आयोजित की जाएगी, लेकिन पांच दिन बाद जगह को बदल दिया गया है. शिमला में होने वाली बैठक अब कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में होगी. कांग्रेस की कर्नाटक में ऐतिहासिक जीत के बाद से पार्टी के नेता गदगद हैं. हालांकि, हिमाचल प्रदेश में भी कांग्रेस की सरकार है, लेकिन विपक्षी दलों को एकजुट करने के लिए बेंगलुरु को चुना गया है. बता दें कि कर्नाटक में कांग्रेस की ऐतिहासिक विजय होने के बाद शपथ ग्रहण समारोह में कई विपक्षी दलों के नेता शामिल होकर एकजुटता का कड़ा संदेश दिया था.

अमरनाथ यात्रा के लिए जम्मू में बाबा के भक्तों को जमावड़ा लगना शुरू

नई दिल्ली। 30 जून से शुरू होने वाली अमरनाथ यात्रा को लेकर जम्मू में बाबा के भक्तों का जमावड़ा लगना शुरू हो गया है. पूरे देश से बाबा के भक्त पहले जत्थे में शामिल होने के लिए जम्मू पहुंच रहे है. इससे पहले प्रशासन में जम्मू पहुंचने वाले सभी भक्तों के लिए अपनी तैयारियां पूरी कर ली हैं देशभर से पहुंचने वाले बाबा के भक्तों के लिए इस बार विशेष इंतजाम किए गए हैं खास तौर पर जो लोग बिना रजिस्ट्रेशन के पहुंचेंगे उनके लिए अलग-अलग जगह पर रजिस्ट्रेशन काउंटर बनाए गए हैं देशभर से पहुंचने वाले बाबा के भक्तों के लिए किस तरह के इंतजाम है वह इस प्रकार हैं. देशभर से जम्मू पहुंचने वाले बाबा के भक्त जिन्होंने रजिस्ट्रेशन नहीं करवाया है वह जम्मू पहुंचकर अपना ऑन स्पॉट रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं. इसके लिए प्रशासन ने बकायदा सात अलग-अलग जगह पर ऑन स्पॉट रजिस्ट्रेशन के काउंटर बनाए हैं जिसमें राम मंदिर, गीता मंदिर ,रेलवे स्टेशन और 4 अन्य जगहों पर रजिस्ट्रेशन काउंटर बनाए गए हैं. इन रजिस्ट्रेशन काउंटर पर रजिस्ट्रेशन करवाने के बाद यात्रियों को सरस्वती धाम पहुंचना होगा जहां से उन्हें यात्रा का टोकन दिया जाएगा. यात्रा का टोकन मिलने के बाद इन यात्रियों के लिए आरएफआईडी कार्ड लेना अनिवार्य होगा जिसके बाद ही इन लोगों को यात्रा करने की अनुमति दी जाएगी. इसके साथ ही जिन लोगों ने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करवाई है उन लोगों को भी सरस्वती धाम से ही टोकन दिए जाएंगे. सरस्वती धाम में टोकन देने के लिए 12 काउंटर बनाए गए हैं जिसमें पहलगाम रूट के लिए 6 और बालटाल रूट के लिए भी 6 काउंटर बनाए गए हैं.

ऑपरेशन थिएटर में हिजाब पहनने की मांगी अनुमति, केरल की मेडिकल छात्रों ने लिखा पत्र

नई दिल्ली। देश में एक बार फिर हिजाब का मुद्दा सुर्खियों में है. दक्षिण भारत के केरल में मेडिकल की छात्रों ने हिजाब पहन कर ड्यूटी करने और ऑपरेशन करने की कॉलेज प्रिंसिपल से इजाजत मांगी है. केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम के सरकारी मेडिकल कॉलेज की सात छात्रों ने कॉलेज प्राचार्य को पत्र लिखा है. छात्रों ने कहा कि मुस्लिम महिलाओं को हिजाब पहनना जरूरी है. बगैर हिजाब का वह बाहर नहीं जा सकती है. अभी इस पर सिर्फ छात्राओं ने अनुमति मांगी है, छात्राओं ने इसे धार्मिक मान्यताओं से जोड़ते हुए ड्यूटी के दौरान हिजाब पहनने की अनुमति मांगी है. छात्रों की इस मांग के बाद आशंका जताई जा रही है कि हिजाब को लेकर तीखी बहस एक बार फिर से शुरू होने वाली है. केरल मेडिकल कॉलेज की 2020 बैच की छात्रा ने प्रिंसिपल को पत्र लिखा. जिसमें उसने जिक्र किया कि उन्हें जल्द से जल्द लंबी आस्तीन वाली स्क्रब जैकेट और सर्जिकल हुड पहनने की इजाजत दी जाए.

नीट की तैयारी करने आए एक और छात्र ने की खुदकुशी

कोटा में नीट (एमबीबीएस) की तैयारी करने आए एक और छात्र ने खुदकुशी कर ली. शहर में दो दिनों में 2 छात्रों के आत्महत्या करने से सनसनी फैल गई. देश के कोचिंग हब के नाम से मशहूर राजस्थान का कोटा हर साल कई छात्रों की आत्महत्या का गवाह बनता है. इस साल अब तक कोटा में 13 छात्र आत्महत्या कर चुके हैं. जानकारी के मुताबिक, जिस छात्र ने आत्महत्या की है वह 17 साल का था और विज्ञान नगर थाना क्षेत्र में वैष्णव समाज के एक छात्रावास में रहता था. वह दो महीने पहले ही नीट की तैयारी के लिए कोटा आया था. छात्र का नाम मेहुल वैष्णव बताया जा रहा है जो उदयपुर के सलूम्बर का रहने वाला था. पुलिस के मुताबिक छात्र ने मंगलार को गले में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली. छात्र का शव एमबीएस अस्पताल की मोर्चरी में रख गया है. वाया गया है. घटना की जानकारी मृतक छात्र के रूम पार्टनर को मिली. उसके बाद छात्र ने गार्ड को इस बारे में सूचना दी. इसके बाद छात्रावास से जुड़े समाज के लोग मौके पर पहुंचे. जिन्होंने सूचना पुलिस को छात्र के आत्महत्या करने की खबर दी. पुलिस ने मौके पर पहुंचकर कमरे का दरवाजा तोड़ा. जहां छात्र गले में फंदा लगाकर लटका हुआ मिला.

पुलिस ने आनन-फानन में छात्र को उताया और अस्पताल लेकर गई. जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया. पुलिन जानकारी दी कि मामला विज्ञान नगर थाना क्षेत्र का है. छात्र राष्ट्रीय पात्रता एवं प्रवेश परीक्षा (नीट) की तैयारी कर रहा था. पुलिस ने बताया कि उसने सोमवार-मंगलवार की रात रात में कथित रूप से खुदकुशी की. छात्र के पास से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है. विज्ञान नगर थाने के क्षेत्र निरीक्षक (सीआई) देवेश भारद्वाज के मुताबिक, युवक के परिवार के सदस्यों के आने के बाद शव का पोस्टमार्टम किया जाएगा. बता दें कि कोटा में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए आने वाले कई छात्र आत्महत्या कर लेते हैं. इस साल भी अब तक 13 छात्र खुदकुशी कर चुके हैं. पिछले साल (2022) भी कोटा में कोचिंग के लिए आए 15 छात्रों ने खुदकुशी कर ली थी.

उत्तर प्रदेश की राजनीति में बड़ा बदलाव, सपा अपनी रणनीति को लेकर सजग

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक बार फिर समाजवादी पार्टी परिवार की तरफ लौटती दिख रही है. वर्ष 2012 में मुख्यमंत्री बनने के बाद अखिलेश यादव ने परिवार के साथ-साथ पार्टी में भी अपना वर्चस्व स्थापित करना शुरू किया. लोकसभा चुनाव 2014 में प्रदेश में सरकार रहने के बाद भी समाजवादी पार्टी की करारी हार के बाद अखिलेश ने रणनीति बदलनी शुरू की. इस चुनाव में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने प्रदेश की 71 सीटों पर जीत दर्ज की. वहीं, एनडीए 80 में से 73 सीटों पर जीत हासिल करने में कामयाब रही. समाजवादी किले मोदी लहर में ढह गए. हालांकि, मुलायम सिंह यादव उस समय भी अपने परिवार को साथ लेकर चल रहे थे.अब कुछ इसी प्रकार की रणनीति पर काम करते अखिलेश यादव भी दिखे. बड़ी संख्या में परिवार के सदस्यों के टिकट काटे गए. कुछ यही स्थिति लोकसभा चुनाव 2019 और यूपी चुनाव 2022 में दिखी. हालांकि, इसका फायदा नहीं होता दिखा. इसके बाद रणनीति में बदलाव हो रहा है. अखिलेश, डिंपल, शिवपाल से लेकर परिवार के अन्य सदस्यों के चुनावी मैदान में उतरने की चर्चा शुरू हो गई है. शिवपाल यादव के आजमगढ़ से चुनावी मैदान में उतारने की चर्चा चल रही है. समाजवादी पार्टी समाजवादी गढ़ को अपने कब्जे में लेने की कोशिश में है. मुलायम सिंह यादव की विरासत को आगे बढ़ाने को लेकर लगातार विवाद होता रहा है. मैनपुरी से डिंपल यादव को चुनावी मैदान में उतारे जाने और उप चुनाव में शानदार जीत के बाद एक बार फिर उनके इसी सीट से ही चुनावी मैदान में उतारने की चर्चा है. हालांकि, सबसे अधिक चर्चा में आजमग? सीट है. लोकसभा उप चुनाव 2022 में आजमग? से भाजपा के दिनेश लाल यादव निरहुआ ने जीत दर्ज की थी.

दिल्ली-एनसीआर में तेज बारिश

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में मॉनसून पूरी तरह से सक्रिय हो गया है. यही वजह है कि दिल्ली-एनसीआर में रुक-रुक कर बारिश हो रही है. कल यानी बुधवार रात हुई बारिश के बाद इंद्र देव आज सुबह से एक बार फिर मेहरबान हो गए और दिन निकलते-निकलते बारिश का मौसम बन गया. जिसके बाद झमाझम हुई बारिश ने मौसम खुशनुमा कर दिया. वहीं, मौसम विभाग ने उत्तर पश्चिम, मध्य और पश्चिम भारत में अगले तीन दिनों तक भारी बारिश की चेतावनी दी है. भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार देश में मॉनसून पूरी तरह से सक्रिय हो चुका है, जो जगह अभी छूटी हुई हैं, वहां अगले तीन दिनों के भीतर मॉनसून छा जाएगा. आईएमडी ने ट्वीट के माध्यम से बताया कि महाराष्ट्र में आज भारी बारिश की संभावना है, जबकि दिल्ली और यूपी समेत उत्तर भारत के राज्यों में बारिश की गतिविधियां बनी रहेंगी. आईएमडी की रिपोर्ट में बताया गया था कि दिल्ली-एनसीआर में आज यानी गुरुवार को दिनभर बादल छाए रहेंगे और कई इलाकों में हल्की व मध्यम बारिश देखने को मिलेगी. तापमान की बात करें तो दिल्ली में आज मिनिमम टेंपरेचर 27.1 डिग्री सेल्सियस और मैग्जीमम टेंपरेचर 36 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया जा सकता है. इसके साथ दिल्ली में आज सुबह आर्द्रता 81 प्रतिशत रिकॉर्ड की गई. वहीं, महाराष्ट्र में मौसम विभाग ने बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है. मौसम विभाग ने राज्य के छह जिलों में भारी बारिश की संभावना जताई है. भारत मौसम विज्ञान विभाग ने कहा कि महाराष्ट्र के 6 जिलों (ठाणे, रायगढ़, पालघर, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग और नासिक) में भारी बारिश की संभावना है, जिसके चलते ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है. देश के पहाड़ी राज्यों हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में भारी बारिश का दौर जारी है. बारिश और भूस्खलन की वजह से यहां 100 से ज्यादा सड़कें ब्लॉक हो गई हैं, जिसकी वजह से सैलानियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है. प्रशानिक अधिकारियों ने जानकारी देते हुए बताया कि लैंडस्लाइड के कारण लगभग 127 सड़कें ब्लॉक होने का अनुमान है, जबकि 90 सड़कों को कल यानी बुधवार देर रात तक खोला गया है.

भीम आर्मी संस्थापक चंद्रशेखर आजाद पर हुए हमले को लेकर

भीम आर्मी कार्यकर्ताओं ने शिवपुरी कलेक्टर को दिया ज्ञापन

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी-खबर शिवपुरी कलेक्ट्रेट परिसर से है जहाँ आज भीम आर्मी के सैकड़ो कार्यकर्ताओ ने ज्ञापन दिया ज्ञापन मैं बताया कि दिनांक 28.06.2023 को सहारनपुर के देवबंद में मनुवादी सोच रखने वाले कुछ अज्ञात हमलावरों ने आजाद समाज पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भीम आर्मी संस्थापक चंद्रशेखर आजाद पर सुनियोजित जानलेवा हमला किया गया है। जो बेहद गंभीर है दुखदाई मुद्दा है। भीम आर्मी संस्थापक चंद्रशेखर आजाद द्वारा पूर्व में कई बार अपनी सुरक्षा व जान के खतरे के संबंध में सहारनपुर एसएसपी व डीजीपी पुलिस लखनऊ व मुख्यमंत्री महोदय को रजिस्टर्ड डाक के माध्यम से पत्र देकर अवगत कराया गया था। परंतु शासन प्रशासन ने उनकी सुरक्षा को जानबूझकर गंभीरता से नहीं लिया जो बहुत ही निराशाजनक है शासन प्रशासन की शिथिलता पूर्ण के कारण ही यह घटना घटित हुई है।

शासन प्रशासन के ढुलमुल रवैया के कारण ही प्रदेश में ऐसी घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है भीम आर्मी संस्थापक चंद्रशेखर आजाद बहुजन

जेड प्लस सुरक्षा की मांग

समाज के लोकप्रिय नेता है जिसमें बहुजन समाज के लाखों लोगों की आस्था और विश्वास है एवं उक्त घटना के कारण समाज के लाखों लोगों की भावनाओं को गहरा आघात पहुंचा है भीम आर्मी लगातार चंद्रशेखर आजाद जी की सुरक्षा की मांग करती रही है उक्त मामले की गंभीरता को समझते हुए उक्त मामले का तुरंत संज्ञान लेते हुए उक्त मामले में दोषी अपराधियो को तुरंत गिरफ्तार किया जाए। इसके अलावा भीम आर्मी के कार्यकर्ताओं ने भीम आर्मी संस्थापक चंद्रशेखर आजाद की सुरक्षा को पुख्ता करते हुए उनके लिए स्पेशल जेड सुरक्षा की भी मांग की ।

3 जुलाई को होगा प्रांतीय कुशवाह समाज का जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- खबर शिवपुरी से है जहां 3 जुलाई को प्रांतीय कुशवाह समाज जिला शिवपुरी द्वारा जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान एवं विचार संगोष्ठी का आयोजन पोहरी बस स्टैंड के सामने जय गोपाल जी मैरिज गार्डन में किया जाएगा। जानकारी देते हुए प्रांतीय कुशवाह समाज शिवपुरी के जिला अध्यक्ष शिशुपाल कुशवाहा ने बताया कि 3 जुलाई को सुबह 11¬30 बजे से जय गोपालजी मैरेज गार्डन मैं जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान और वैचारिक संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा इसमें समाज के होनहार छात्र-छात्राओं की प्रतिभा सम्मान के साथ गत वर्ष मैं दसवीं और बारहवीं कक्षा में 80 परसेंट से अधिक बनाने वाले छात्र-छात्राओं का सम्मान किया जाएगा और हाल ही में जिले भर में समाज के जितने भी युवक युक्ति जिनका सरकारी नौकरी में चयन हुआ है उनका भी सम्मान किया जाएगा साथ ही समाज के लिए अपना कीमती समय देने वाले समाजसेवी लोगों का भी सम्मान किया जाएगा और भी बहुत सारी बहुत प्रतिभा है जो समाज में है और उन को उजागर करने का कार्य प्रांतीय कुशवाह समाज के द्वारा किया जाता है ऐसी प्रतिभाओं का सम्मान जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह में किया जाएगा जिले के समस्त कुशवाहा समाज के लोगों से आग्रह करना चाहता हूं कि आने वाली 3 जुलाई को इस प्रोग्राम में आकर इस प्रोग्राम को सफल बनाएं साथ ही जिन छात्र-छात्राओं की परसेंटेज 80प्रतिशत है वह अपनी मार्कशीट की फोटो कॉपी लेकर प्रोग्राम में आ सकते हैं।

चौकी हिम्मतपुर थाना पिछोर पुलिस की बड़ी कार्यवाही

एक आरोपी के कब्जे से 60 लीटर अवैध कच्ची शराब व एक मोटर साइकिल जप्त कीमती करीबन 66000 रूपए व आरोपी गिरफ्तार

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पिछोर। पुलिस अधीक्षक शिवपुरी

रघुवंश सिंह भदोरिया एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवपुरी प्रवीण कुमार भूरिया के निर्देशन में एवं एसडीओपी पिछोर प्रशांत शर्मा के मार्गदर्शन में अवैध शराब के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तारतम्य में दिनांक 28 /06/23 को मुखबिर सूचना मिली कि एक व्यक्ति ग्राम बालूसा से मोटरसाइकिल पर दो कट्टीयो में अवैध शराब लेकर बम्हारी तरफ जा रहा है सूचना पर से ग्राम हिम्मतपुर पर उनि. नितिन भार्गव मय फोर्स के पहुंचे वा चेकिंग लगाई तुम मुखबिर द्वारा बताए हुए हुलिये का व्यक्ति मोटरसाइकिल से दो कट्टीया लाता दिखा जिसने पुलिस को देख कर भागने का प्रयास किया जिसे हमराही फोर्स की मदद घेराबंदी कर पकड़ा गया तथा मोटरसाइकिल पर बधी कट्टीयो को चेक किया तो 60 लीटर अवैध कच्ची शराब मिली मौके पर आरोपी के कब्जे से 60 लीटर शराब व शराब ो मे प्रयुक्त मोटरसाइकिल को विधिवत जप्त किया तथा आरोपी को मौके पर गिरफ्तार किया गया थाना वापसी पर आरोपी के विरुद्ध अपराध क्रमांक 333/23 धारा (34)2 आबकारी एक्ट का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी पिछोर निरीक्षक गब्बर सिंह गुर्जर, चौकी प्रभारी हिम्मतपुर उपनिरीक्षक नितिन भार्गव, प्रतिपाल सिंह चौहान, सैनिक राहुल भार्गव, व सैनिक रामकिशन यादव , की सराहनीय भूमिका रही।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग जिला शिवपुरी के आगे कलेक्टर महोदय के आदेश बे असर

राकेश परिहार पिछोर

पिछोर खनियाधाना। ग्राम पंचायत नगरेला जनपद पंचायत खनियाधाना की ग्राम पंचायत में पूर्व में ठेकेदार द्वारा काम किया गया था कार्यालय लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग खण्ड शिवपुरी पत्र क्रमांक 2427 दिनांक 26/9/ 2020 एवं पत्र क्रमांक 2458, दिनांक 28/9/2020 के परिपालन में काम किया गया जो बीक्यू के हिसाब से कार्य ठेकेदार द्वारा काम पूर्ण कर दिया गया इसके बाद लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग शिवपुरी द्वारा कार्य पूर्ण होने का पत्र क्रमांक 2670 दिनांक 01/10/2021को सफलतापूर्वक कार्य पूर्ण होने पर संबंधी प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया लेकिन ठेकेदार की एफडीआर ,धरोहर राशि, आज 1 साल 8 महीना के लगभग समय बीत चुका है लेकिन उन्होंने आज दिनांक तक राशि वापस नहीं की पीएचई विभाग के जिला अधिकारी का मनमाने ढंग का रवैया ठेकेदार की परेशानी का कारण बन चुका है और जब ठेकेदार द्वारा संपर्क किया गया तब उन पर ?50000 की राशि धरोहर राशि देने के बदले मांग की गई तब ठेकेदार द्वारा विरोध किया गया तब

जिले के अधिकारी कुछ स्टाफ द्वारा बताया गया कि साहब की मजबूरी है हम लोगों को भी ऊपर पैसा भेजना पड़ता है तब ठेकेदार द्वारा कार्यालय कलेक्टर जनसुनवाई क्रमांक 2726 दिनांक 06/06/2023 एवं पुनः जनसुनवाई क्रमांक 2912 दिनांक 13/06/2023 को आवेदन प्रस्तुत किया गया जिसमें अंतर की राशि भी कार्यालय प्रमुख अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग जल भवन बाणगंगा भोपाल द्वितीय संशोधन आदेश पच्चीसबी बैठक दिनांक15/07/2020 की अनुशंसा पर पत्र क्रमांक 254 दिनांक 06/08/2020 के परिपालन में मेरी 4,50 लाख अंतर की एवं एस्ट्रा कार्य की राशि भुगतान शीघ्र करबाने की मांग की गई लेकिन आज दिनांक तक क्या कार्रवाई हुई इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है ऐसे अधिकारियों के खिलाफ प्रशासन से ठेकेदार द्वारा मांग की गई कि शीघ्र ही हमारी जनसुनवाई का निराकरण कर न्याय दिलावे और ऐसी अधिकारियों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई कर ठेकेदार की क्षतिपूर्ति की जावे जिससे भविष्य में लोगों की साथ इस प्रकार की पुनावृत्ति ना हो

अफवाह उड़ाना भाजपा का हमेशा से कार्य रहा है

भाजपा द्वारा पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष मुन्ना लाल कुशवाहा को मोहरा बनाकर कर रहे सामाजिक राजनीति

- कैलाश कुशवाहा
अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- विधानसभा चुनावों के नजदीक आते-आते अपनी राजनीतिक रोटियां सेकने के लिए भाजपा और कांग्रेस दोनों ही किसी ना किसी प्रकार से समाजों को टारगेट कर रही है जहां हाल ही में कांग्रेस में शामिल हुए राकेश गुप्ता के बयानों पर पलटवार करते हुए भाजपा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष मुन्ना लाल कुशवाहा से कुशवाहा समाज के अपमान होने की बात कहलवाई तो वही आज पूरी विधानसभा के पूर्व विधानसभा प्रत्याशी कैलाश कुशवाहा ने एक बैठक कराई जिसमें कांग्रेस जिला अध्यक्ष श्री प्रकाश शर्मा उपाध्यक्ष दिनेश वशिष्ठ हाल ही में दोबारा से कांग्रेस में शामिल हुए बैजनाथ यादव और राकेश गुप्ता शामिल हुए इस बैठक में कुशवाहा समाज के वरिष्ठ समाजसेवी एवं अन्य लोग शामिल हुए जिसमें समस्त पदाधिकारी और समाज के लोगों के सामने राकेश गुप्ता ने बताया कि वह कभी भी कुशवाहा समाज से अलग नहीं हुए उनके पिताजी के समय से कुशवाह समाज को वह

अपने घर का सदस्य मानते हैं और हमेशा ही वह कुशवाह समाज के लोगों के बीच में रहकर ही अपना कार्य किया है उन्होंने बताया कि कुशवाहा समाज के लोग हमेशा ही उनके साथ रहे हैं और मैंने पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष जिनको एक कर्मचारी कहकर संबोधित कर रहा था उनको भाजपा ने तोड़ मरोड़ कर गलत प्रकार से पेश कर रही है जो कि भाजपा का हमेशा से ही कार्य रहा है उन्होंने कहा यदि कुशवाहा समाज के लोगों को ऐसा लगता है कि मैंने उनका अपमान किया है तो मैं उनके सामने हाथ जोड़कर माफी मांगता हूं जिस पर समाज बंधुओं ने कहा कि आपके द्वारा किसी प्रकार का कोई अपमान नहीं हुआ है यह तो सब राजनीतिक लोग हैं जो अफवाह उड़ा रहे हैं जहां कांग्रेस जिला अध्यक्ष गुजरात चौहान ने बताया की भाजपा का कार्य हमेशा ही लोगों को गुमराह करना रहा है और वह गुमराह करती आ रही है उनको कहीं ना कहीं इस बात का दुख है कि उनके लोग कांग्रेस में शामिल हो रहे हैं जिससे वह कमजोर होते जा रहे हैं इसलिए वह बौखला गए हैं पोहरी विधानसभा प्रत्याशी कैलाश कुशवाहा ने बताया भाजपा झूठ की राजनीति करती है हमेशा लोगों को अफवाह उड़ा कर दूसरे लोगों से लड़ जाती है भाजपा का कार्य हमेशा ही समाजों में बटवारा रहा है जो कि अब नहीं होगा आने वाली विधानसभा 2023 में भाजपा का मध्य प्रदेश से सूपड़ा साफ कर प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनाएंगे।

न्यायालय पिछोर जिला शिवपुरी ने शराब पीकर मोटर साइकिल चलाने वाले चालक पर किया 16, 500 रुपये का जुर्माना

राकेश परिहार पिछोर
9691338626

पिछोर। जुर्माना। दिनांक 16/6/23 को पुलिस थाना पिछोर की पार्टी ने जेल रोड पिछोर पर चेकिंग के दौरान शरद पुरोहित निवासी खनियाधाना को मोटरसाइकिल हीरो एचएफ डीलक्स को खतरनाक ढंग से व शराब पीकर चलाता पाया एवं उसके पास ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं था। मोटरसाइकिल की नंबर प्लेट पर नंबर भी नहीं था जबकि मोटरसाइकिल एचएफ डीलक्स का नंबर स्क्क 33 ह्व2354 था। मोटरसाइकिल मालिक कुशल पुरोहित निवासी खनियाधाना ने मोटरसाइकिल अपने छोटे भाई शरद पुरोहित को चलाने को दी थी जबकि शरद पुरोहित के पास ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं था। मोटरसाइकिल चालक शरद पुरोहित के विरुद्ध धारा 184,

185,3/181,51/177 एमव्ही एक्ट की व मोटरसाइकिल मालिक कुशल पुरोहित के विरुद्ध 5/ 180 एमव्ही एक्ट की चालान की कार्यवाही की। न्यायालय पिछोर जिला शिवपुरी श्रीमान जेएमएफसी अमनदीप सिंह छावड़ा ने शरद पुरोहित पर 16,500 रुपये व कुशल पुरोहित पर ?5,000 रुपये का जुर्माना किया । पुलिस थाना पिछोर टीम में एएसआई अरविंद यादव, शैलेंद्र सिंह चौहान ,आरक्षक प्रदीप कौरव ,रामनाथ रावत, मांगीलाल गुर्जर व बचान सिंह तोमर शामिल रहे।

अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं को आवासीय अध्ययन हेतु प्रवेश हेतु अंतिम तिथि आज

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- ग्वालियर रोड स्थित मेडिकल कॉलेज शिवपुरी के पास में कार्यालय शा.कन्या शिक्षा परिसर एक शासकीय आवासीय विद्यालय है जिसमें कक्षा 06 वीं से 12वीं तक की अनुसूचित जनजाति वर्ग की छात्राओं को आवासीय अध्ययन की सुविधा प्रदान की जाती है। कार्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन जमा करने हेतु आवश्यक दस्तावेज के साथ 30 जून तक उपस्थित हो सकते है। उक्त विद्यालय में आवासीय अध्ययनरत छात्राओं के लिए आवश्यक सुविधाए उपलब्ध है। जिसमें छात्राओं को भोजन, आवास की फ्री सुविधा प्रदान की जाती है। छात्राओं को गणवेश की फ्री सुविधा प्रदान की जाती है। छात्राओं के लिए नवनिर्मित कवर्ड कैंपस है जिसमें खेल मैदान की सुविधा प्रदान है। सत्र 2023-24 में विद्यालय में कक्षा 7, 8, 9 एवं 11वीं (बायो, मैथ, कॉमर्स) में रिक्त सीटों के विरुद्ध अनुसूचित जनजाति वर्ग कि छात्राओं को प्रवेश हेतु प्रवेश की प्रक्रिया प्रचलन में हैं। प्रवेश लेने हेतु इच्छुक छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को सूचित किया जाता है कि बालिका के प्रवेश आवश्यक दस्तावेज के साथ कार्यालय में संपर्क करें। कक्षा 11 वीं में प्रवेश कक्षा 10 वीं में प्राप्त अंकों के प्रतिशत के मेरिट के आधार पर दिया जायेगा एवं अन्य कक्षाओं के लिए प्राप्त आवेदनों की परीक्षा आयोजित की जाएगी एवं प्राप्त परिणाम के विरुद्ध रिक्त सीट मेरिट क्रम में भरी जाएगी। कार्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन जमा करने हेतु आवश्यक दस्तावेज के साथ उपस्थित हो, जिसकी अंतिम तिथि 30 जून निर्धारित की गई है। आवश्यक दस्तावेजों में पिछले विद्यालय का शाला त्याग प्रमाण पत्र, पिछली कक्षा की अंकसूची छायाप्रति, छात्रा के तीन फोटो, आधार कार्ड की छायाप्रति, समग्र आई.डी. की छायाप्रति, जाति प्रमाण पत्र बालिका या माता-पिता का, आय प्रमाण पत्र, मूल निवासी प्रमाण पत्र बालिका या माता-पिता का, बैंक अकाउंट नंबर, मोबाइल नंबर शामिल है।

आम आदमी पार्टी की 1 जुलाई को ग्वालियर में महारैली

आप कर रही आम जनता को महारैली के लिए आमंत्रित

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । आम आदमी पार्टी मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव का शंखनाद ग्वालियर चंबल अंचल से करने जा रही है यह चुनावी शंखनाद 1 जुलाई शनिवार ग्वालियर मेला ग्राउंड में महारैली के माध्यम से होगा जिसमें मुख्य रूप से आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक,दिल्ली मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल एवं पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार भगवंत मान महारैली को संबोधित करेंगे । इसी महारैली की तैयारी को लेकर भिंड जिले में आम आदमी पार्टी के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता पूरी ताकत के साथ तैयारियों में जुटे हुए हैं महारैली में भिंड जिले से 25 हजार लोगों के शामिल होने का अनुमान बताया जा रहा है,वहीं महारैली में 1 लाख से अधिक लोगों के एकत्रित होने का दावा पदाधिकारियों का है इसके लिए भिंड जिले की पांचों विधानसभा में पार्टी ने पंजाब से महारैली के प्रचार हेतु विधानसभा प्रभारी बनाकर भेजे हैं,जो स्थानीय पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं के साथ हर गली मोहल्ले गांव में जनता के बीच जाकर दिल्ली एवं पंजाब मॉडल की उपलब्धियां गिना रहे हैं और जो आम जनता को आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा जन सुविधाएं दी जा रही हैं फ्री शिक्षा स्वास्थ्य फ्री बिजली पानी महिलाओं का बस किराया फ्री 2500 रुपए मासिक पेंशन जैसी कई लाभकारी चीजों के बारे में बता रहे हैं । एक मौका केजरीवाल को इस नारे के साथ लोगों को विश्वास दिला रहे हैं कि हमने दिल्ली और पंजाब में जो करके दिखाया है वही हम मध्यप्रदेश में करना चाहते हैं आम आदमी पार्टी जो बोलती है वह करती है। इन्हीं सभी चीजों के साथ आम जनता को आमंत्रण पत्र देकर महारैली में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं उक्त जानकारी आप युवा नेता विक्रांत दीक्षित ने प्रेस को जारी विज्ञप्ति में दी।

भिंड विधानसभा के जनसंपर्क में मुख्य रूप से पंजाब से प्रभारी बनकर आए रोहित स्याल,मैडम रेखामणि शर्मा,विजय कुमार विट्ठा,उनके साथ जिला अध्यक्ष अरविंद जोशी,जिला सचिव धीरज गुप्ता,महिला विंग जिला अध्यक्ष ममता मिश्रा,दानवीर दीक्षित,आप नेता जयदीप सिंह फौजी सरकार,पूर्व प्रत्याशी साकेत सक्सेना,प्रशांत थापक,जबर सिंह यादव,सत्यनारायण कतरोलिया, गोपाल राजावत, विजय शर्मा,शिवम पंडोरिया,अंकित समाधिया,राजेश शाक्य,विक्रम शाक्य,साहिल सविता, अजीत भदोरिया,पूरन रावत,जसवंत शाक्य,विक्रम कैटर्स,अब्दुल मजीद, लक्ष्मण भदोरिया, विजय चौधरी, शिवम पचोरी आदि लोग जनता के बीच जाकर महा रैली में शामिल होने की अपील कर रहे हैं।

अंबेडकरनगर के जलालपुर थाना अंतर्गत समाजवादी पार्टी कार्यालय के सामने सामान ले जाते समय

पलटा ई-रिक्शा लदा सामान रोड पर बिखरा चालक आई हल्की चोटें रोड पर चल रहे यात्री बाल-बाल बचे

अंबेडकर नगर से रामदयाल गौतम की रिपोर्ट

खरगोन। जिले सहित समूचे अंचल में गुरुवार को ईद-उज-अजहा (बकरीद) का त्यौहार पूरे अकीदत और ऐतराम के साथ मनाया गया। सुबह ईदगाह सहित अन्य मस्जिदों में विशेष नमाज अदा की गई। नमाज के बाद त्याग और समर्पण के प्रतीक स्वरूप कुर्बानियां दी गई। ईदगाह पर मु?ती तारिक ने नमाज अदा कराने के बाद बकरीद का महत्व बताया। उन्होंने कहा ईद उल अजहा कुर्बानी और संयम का दिन है। इस्लामी कैलेंडर के अंतिम माह जिलहिज्जा की दसवीं तारीख को यह पर्व मनाया जाता है। ईद उल अजहा एकता का संदेश देता है एकता से बड़ी कोई दौलत नहीं है। बकरीद के नमाज पढ़कर समुदाय के लोगों ने अमन शांति एवं खुशहाली के साथ ही भाईचारे की दुआएं मांगी। एक दूसरे को गले लगाकर बधाई दी। पर्व को लेकर सुबह से ही लोगों में उत्साह देखा गया। समाज सदर अल्ताफ आजाद ने कहा कि ईद का पर्व अल्लाह की इबादत में सबकुछ कुर्बान करने की सिख देता है। इस पर्व पर विशेष नमाज में सभी की खुशहाली ओर देश मे खुशहाली अमनो अमान बना रहे ऐसी दुआ की गई। नमाज के बाद दिनभर दावतों का दौर चला। जिससे मुस्लिम बस्तियों में खासी चहल पहल रही।

नगर निगम की सौगात भी शीघ्र मिलेगी भिण्ड जिले को: विधायक संजीव सिंह

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । भारतीय जनता पार्टी के विधायक संजीव सिंह कुशवाह संजू ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा की विकास यात्रा की घोषणा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने हमारे जिले को मेडिकल कॉलेज की सौगात देकर जिले के विद्यार्थियों का मान और सम्मान आगे बढ़ाने का कार्य करते हुए उन्हें गौरवान्वित किया है और जिले को विकास की एक नई ऊर्जा प्रदान की है।

श्री कुशवाह ने मुख्यमंत्री के प्रति भिण्ड विधानसभा क्षेत्र की जनता के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा की जनता की मांग काफी लंबे समय से मेडिकल कॉलेज खोलने कर रही थी जिसे मुख्यमंत्री रहे कैबिनेट में विशेष सौगात देकर विकास कार्य को आगे बढ़ाने का काम किया है उन्होंने कहा कि विकास यात्रा यहां तक ही सीमित नहीं और नगर पालिका से नगर निगम बनाने का प्रस्ताव भी प्रदेश सरकार के पास पहुंच चुका है, बहुत जल्दी ही यह सौगात हमारे शहर की जनता को मिलेगी उन्होंने कहा प्रदेश की भाजपा सरकार विकास की दिशा में आगे बढ़कर काम कर रही है जो कांग्रेस की सरकार दिग्विजय सिंह की रही हो या कमलनाथ की रही हो जिन्होंने कभी मेडिकल खोलने की बात नहीं कही नगर पालिका से नगर निगम बनाने की बात नहीं कही लेकर हमारी भाजपा सरकार ने जनता के मानव सम्मान के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए यह घोषणा की है इससे छात्र-छात्राओं को बाहर नहीं अब जिले में ही डॉक्टर बनने का अवसर मिलेगा और एमबीबीएस एमपी की पढ़ाई कर स्वास्थ्य के प्रति लोगों की समाज सेवा के लिए हमेशा तत्पर आगे रहेंगे और हमारे जिले का नाम रोशन होगा। श्री कुशवाह ने मंत्रिपरिषद् द्वारा खरगोन,धार,भिण्ड, बालाघाट टीकमगढ़ तथा सीधी जिलों में 100 एम.बी.बी.एस सीट प्रवेश क्षमता के नवीन चिकित्सा महाविद्यालय स्थापित किये जाने के लिये सैद्धांतिक सहमति प्रदान की गई है। चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना से क्षेत्र की जनता को तृतीयक स्तर की चिकित्सकीय सुविधाएँ उपलब्ध होने के साथ-साथ प्रदेश के छात्रों के लिये चिकित्सा क्षेत्र की 600 एम.बी.बी.एस. सीट की वृद्धि होगी। उन्होंने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का आभार जताते हुए कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा भिंड जिले को बेहतर और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए मेडिकल कॉलेज की सौगात दी है, यह भिंड जिले के लिए काफी महत्वपूर्ण निर्णय है, जिले की जनता अब बेहतर सुविधाओं के लिए दूसरे शहरों पर निर्भर नहीं रहेगी और चिकित्सा के क्षेत्र में पढ़ाई करने के लिए दूसरे शहरों पर निर्भर रहने वाले जिले के छात्र अब जिले में रहकर ही पढ़ाई कर सकेंगे।

मस्जिदों में विशेष नमाज अदा की गई

खरगोन। जिले सहित समूचे अंचल में गुरुवार को ईद-उज-अजहा (बकरीद) का त्यौहार पूरे अकीदत और ऐतराम के साथ मनाया गया। सुबह ईदगाह सहित अन्य मस्जिदों में विशेष नमाज अदा की गई। नमाज के बाद त्याग और समर्पण के प्रतीक स्वरूप कुर्बानियां दी गई। ईदगाह पर मुश्ती तारिक ने नमाज अदा कराने के बाद बकरीद का महत्व बताया। उन्होंने कहा ईद उल अजहा कुर्बानी और संयम का दिन है। इस्लामी कैलेंडर के अंतिम माह जिलहिज्जा की दसवीं तारीख को यह पर्व मनाया जाता है। ईद उल अजहा एकता का संदेश देता है एकता से बड़ी कोई दौलत नहीं है। बकरीद के नमाज पढ़कर समुदाय के लोगों ने अमन शांति एवं खुशहाली के साथ ही भाईचारे की दुआएं मांगी। एक दूसरे को गले लगाकर बधाई दी। पर्व को लेकर सुबह से ही लोगों में उत्साह देखा गया। समाज सदर अल्ताफ आजाद ने कहा कि ईद का पर्व अल्लाह की इबादत में सबकुछ कुर्बान करने की सिख देता है। इस पर्व पर विशेष नमाज में सभी की खुशहाली ओर देश मे खुशहाली अमनो अमान बना रहे ऐसी दुआ की गई। नमाज के बाद दिनभर दावतों का दौर चला। जिससे मुस्लिम बस्तियों में खासी चहल पहल रही।

भीम आर्मी चीफ चन्द्रशेखर आजाद के उपर हुए हमले से आक्रोशित होकर सौपा ज्ञापन

खरगोन जिले से मुन्ना खान पुष्पांजली टुडे

खरगोन। भीम आर्मी व आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद पर बुधवार उत्तरप्रदेश के देवबंद मे अज्ञात लोगों के द्वारा गोली फायरिंग की गई थी। जिससे गोली उनकी कमर के पास छूकर निकल गई थी। इसी संबंध में खरगोंन जिले के भीम आर्मी के कार्यकर्ताओं ने खरगोंन जिलामुख्यालय पर राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौपा। ज्ञापन में बताया गया कि उक्त घटना के दोषियों पर रासुका लगाई जाए। चंद्रशेखर आजाद को झेट प्लस सुरक्षा प्रदान कराई जाएं। मामले को फास्ट्रेक कोर्ट में चलाने की मांग की गई। सुनील चौहान,बलराम कनाडे, रविन्द्र खाण्डेकर, जीतू वर्मा,कार्तिक देवले,परवीन परमार, निरंजन सांवले, राकेश खेड़े, लखन गांगले,नरेन वासुरे,अक्षय खाण्डेकर,संजय खाण्डे,बसंत कनाडे, शिवखेड़ेकर,जय खेडेकर, अजय भालसे, प्रदीप सिटोले, सुमित माहेश्वरी, कुणाल सोनवे, अनिल गांगले, दीपक कनाडे, विशाल खेडेकर,अजय वानखेड़े सहित अनेको जन शामिल रहे।

हेजे गजे चिगरू कार्यक्रम का हुआ आयोजन

पुष्पांजली टुडे

बेंगलुरू। चिगरू कल्चर लैंड चैरिटेबल ट्रस्ट ने 24 जून को बेंगलुरु के मल्लाटल्ली कलाग्राम में भरतनाट्यम कार्यक्रम का आयोजन किया। कर्नाटक के विभिन्न जिलों से सैकड़ों कलाकारों ने भाग लिया और सांस्कृतिक भव्यता में चार चांद लगा दिये। कार्यक्रम की अध्यक्षता महेंद्र मुणोठ ने की द्यकार्यक्रम का शुभारंभ कथा खिलाड़ी जयंती ने शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि दुबई की नृत्य कलाकार रेशमी और हांगकांग की कथा नृत्यांगना रूपा किरण को आइकन अवार्ड्स 2023 से सम्मानित किया गया । संस्था के प्रमुख संतोषी प्रशांत ने बताया कि चिगरू इंस्टीट्यूट का यह 81वां कार्यक्रम है। कार्यक्रम में प्रशांत, सुधींद्र, अभिषेक, जीविता, रूपा, लीला मौजूद रहे।

भारतीय उधोग व्यापार मंडल राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित

पुष्पांजली टुडे

नई दिल्ली। दिनांक 29जून 2023 सुबह 10बजे नई दिल्ली मे भारतीय उधोग व्यापार मंडल कि राष्ट्रीय कार्यकारिणी कि अति महत्वपूर्ण मिटिंग आयोजित कि गई । इस मिटींग में भारतीय उधोग व्यापार मंडल के वरिष्ठ राष्ट्रीय महामंत्री ऐवम तामीलनाडु पॉन ब्रोकर ऐवम ज्वेलर्स एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष स्वामी तेजानन्द ने एक बार पुन दक्षिण भारत के गिरवी ऐवम ज्वेलर्स व्यापारियों पर जो चोरी का माल खरीदने के नाम पर जो पुलीस विभाग का उतपिडन हो रहा उसे तुरन्त रोकने के लिए केन्द्र सरकार से बात चित करके स्थाई समाधान करवाने का पुर जोर तरीखे से मांग रखी गई । इस कार्यकारिणी की बैठक में भारतीय उधोग व्यापार मंडल के राष्ट्रीय चैरमेन बाबुलाल गुप्ता वरिष्ठ राष्ट्रीय महामंत्री ऐवम उत्तर प्रदेश भारतीय उधोग व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष एस. मुकुन्द मिश्र, सनील पाण्डे, प्रहलाद खण्डेलवाल एवं कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

हर्षोल्लास के साथ मनाई गई ईद-उल-अजहा, नमाज के बाद की गई देश में अमन व भाईचारे की दुआ

जनप्रतिनिधियों ने मस्जिदों में पहुंचकर दी मुबारकबाद

दैनिक पुष्पांजली टुडे

गोहद। नगर में ईद उल अजहा का तोहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया लोगों ने मस्जिदों में जाकर ईद उल अजहा की 2 रकात नमाज छः तकबीरों व खुतुवा सुनकर आदा की। नमाज के पश्चात देश में अमन चैन, खुशहाली, भाईचारा, लोगों की सलामती आदि के लिए दुआएं की गईं, सर्वप्रथम 7:30 बजे खपरिया मस्जिद, 7:45 बजे मस्जिद दारूगरान एवं दरगाह बाबा कपूर मस्जिद, 8:00 बजे ईदगाह मस्जिद, 8:15 बजे बारिश अली की (छोटी) मस्जिद, 8:30 कादरी मस्जिद इसी प्रकार गोहद चौराहे की मस्जिदों में नमाज अदा की गई। नमाज के पश्चात जनप्रतिनिधियों ने मस्जिदों में पहुंचकर लोगों को ईद-उल-अजहा की मुबारकबाद दी। जिसमें कांग्रेस के नेता केदार सिंह कौशल ने मस्जिदों में पहुंचकर लोगों के गले मिलकर उन्हें मुबारकबाद दी। नमाज के पश्चात जिन लोगों के यहां कुर्बानियां होनी थी उनके यहां कुर्बानी की गई।

चाक-चौबंद रही सुरक्षा व्यवस्था- ईद-उल-अजहा के मौके पर पुलिस प्रशासन के द्वारा नगर की सुरक्षा व्यवस्था को चाक-चौबंद बनाने के लिए विशेष इंतजाम किए गए जिसमें प्रत्येक मस्जिद एवं चौराहों पर पुलिस फोर्स की तैनाती की गई। नगर पालिका के द्वारा भी मस्जिदों पर टैंकरों से पानी की व्यवस्था व साफ सफाई एवं खड़िया डाल कर मस्जिदों के आसपास मार्किंग कराई गई। चौपट रही विद्युत व्यवस्था- ईद-उल-अजहा के मुबारक मौके पर रात्रि 3:00 बजे से नगर के अधिकांश हिस्सों की विद्युत व्यवस्था ठप हो गई, क्योंकि डाक बंगला फीटर की विद्युत सप्लाई रात्रि 3:00 बजे से बाधित होकर जो सुबह 7:15 बजे बहाल हो सकी, नगर की सभी मस्जिदें की विद्युत सप्लाई डाक बंगला फीटर से होने की वजह से इन मस्जिदों में अंधेरा पसरा रहा और लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा, मस्जिदों में ईद उल अजहा की नमाज की तैयारियों में भी खलल पडा।

इनका कहना है

हमारी सब से गुजारिश है कि ईद-उल-अजहा का त्यौहार सही तरीके से मनाएं किसी प्रकार की अफवाह पर ध्यान न दें, कुर्बानी करते समय सफाई का ध्यान रखें, खून वगैरह को नालियों में न वहाएं जिससे लोगों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना ना करना पड़े।

मोहम्मद शालिम साहब
पेश इमाम खपरिया मस्जिद गोहद

आज के दिन मुसलमान नमाज पढ़कर खुशी मनाते हैं इसके अलावा कुर्बानी भी की जाती है कुर्बानी इब्राहिम अलैहिस्सलाम की याद मैं की जाती है जो इस्लाम का अहम हिस्सा है आज के दिन नमाज के बाद कौम व वतन के लिए दुआएं की गई, हम सब की यही दुआ है कि हमारा वतन शांति व सद्भाव का पूरी दुनिया के अंदर केंद्र बने।

रईसउद्दीन हाशमी
शहर काजी गोहद

सम्पादक की कलम से

वीजा धोखाधड़ी

आज इंसान की धन पाने की लिप्सा कितनी विकराल हो चली है कि वह चंद रुपयों के लिये मासूम जिंदगियों से खिलवाड़ करने से भी गुरेज नहीं करता। कैसे-कैसे मां-बाप व रिश्तेदार कर्ज लेकर, सुनहरे सपनों को पूरा करने के लिये बच्चों को विदेश में पढ़ाई के लिए भेजने का इंतजाम करते हैं। ऐसे बच्चों का पैसा लेकर भी उनके साथ धोखाधड़ी हो जाए तो इसे दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जायेगा। भ्रष्ट एजेंट नहीं सोचते कि ये लड़के-लड़कियां प्रवासन कागजात फर्जी पाये जाने पर कहां जाएंगे, देश कैसे लौटेंगे? उनके सपनों का क्या होगा? हाल में ही जालंधर के एक ट्रैवल एजेंट की कनाडा में गिरफ्तारी कई राज़ खोलती है। एजेंट पर सैकड़ों छात्र-छात्राओं को फर्जी कॉलेज प्रवेश पत्र के आधार पर अध्ययन वीजा दिलाने में धोखाधड़ी का आरोप है। यह बात चौंकाती है कि उक्त एजेंट भी फर्जी कागजात के आधार पर कनाडा में घुसने की जुगत में था और उसके कर्मों का फल सामने आ गया। एजेंट की गिरफ्तारी के बाद उसे भारत वापस लाने व मुकदमा चलाने की कार्यवाही शुरू हो चुकी है। यह घटना उन तमाम भ्रष्ट एजेंटों के लिये भी एक सबक है जो फर्जी तरीके से लोगों को विदेश भेजने के कुत्सित प्रयासों में लगे हैं। उक्त एजेंट के खिलाफ गत 17 मार्च को जालंधर में प्राथमिकी दर्ज होने के बाद उसे लुकआउट सर्कुलर का भी सामना करना पड़ा। दरअसल, कनाडा सरकार पंजाब व कुछ अन्य राज्यों से अध्ययन वीजा के जरिये पढ़ने गये छात्र-छात्राओं के सर्टीफिकेट फर्जी पाये जाने के बाद उन्हें देश छोड़ने के लिये कह रही थी। जिसके खिलाफ भारतीय छात्रों ने आंदोलन किया। राजनीतिक दबाव के बाद कनाडा सरकार ने महसूस किया कि ये छात्र धोखाधड़ी के शिकार हुए हैं। साथ ही सारे मामले की जांच के आदेश दिये गये हैं। विश्वास है कि मामले की वास्तविकता सामने आने के बाद संभवतः अध्ययन के लिये गये और नौकरी कर रहे युवाओं को देर -सवेर न्याय मिल सकेगा। दरअसल, पंजाब में कबूतरबाजी का लंबा इतिहास रहा है। बड़े नाम व कलाकार भी लोगों को फर्जी तरीके से विदेश भेजने की कोशिशों में लिप्त पाये गये। इस मामले में कई चर्चित लोगों की गिरफ्तारियां भी हुई हैं। लेकिन यह संभव नहीं कि सत्ता व तंत्र की काली भेड़ों की मिलीभगत के बिना अवैध प्रवासन का गोरखधंधा यूं ही बदस्तूर जारी रहे। कह सकते हैं कि नियामक संस्थाएं व निगरानी करने वाला तंत्र या तो आपराधिक लापरवाही में लिप्त है या फिर अपराधियों से सांठगांठ किये हुए है। किसी व्यक्ति को विदेश भेजने की प्रक्रिया खासी लंबी है और कई जगहों पर जांच की प्रक्रियाओं से गुजरती है। बिना किसी मिलीभगत के कोई आव्रजन एजेंट किसी व्यक्ति को विदेश भेज सके, यह संभव नहीं है। जाहिर है ऐसे मामलों की तह तक जाने की जरूरत है और दोषियों को ऐसा दंड दिया जाना चाहिए, जो फर्जीवाड़ा करने वालों के लिये नजीर का काम करे। दरअसल, कनाडा में जिन युवाओं के कागजातों को लेकर सवाल उठाये जा रहे हैं उनमें से अधिकांश वर्ष 2017 से 2019 के बीच कनाडा पहुंचे थे।

एमएसपी को कानूनी गारंटी में किसान की खुशहाली

आखिरकार, हरियाणा सरकार किसानों को सूरजमुखी की 'उपयुक्त' कीमत अदा करने पर सहमत हो गयी है। कुछ समय पूर्व किसान इस मांग को लेकर आंदोलन कर रहे थे, और सरकार इनकार करती रही थी। किसानों ने विरोध जताने के लिए चंडीगढ़-दिल्ली हाईवे को बाधित किया, यातायात खुलवाने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज किया। किसान नेताओं को हिरासत में भी लिया। आंदोलनकारी किसानों ने सूरजमुखी की फसल के उचित भाव की मांग को लेकर एकजुटता दर्शायी। जबकि हरियाणा सरकार ने दावा किया था कि वह भावांतर भरपाई स्कीम के तहत किसानों को क्षतिपूर्ति दे रही थी लेकिन किसान पूर्व घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य पर ही फसल की खरीद किये जाने पर अड़िग थे। बतौर एमएसपी 6400 रुपये प्रति क्विंटल के बजाय किसानों को अपनी फसल 4200 से 4800 रुपये प्रति क्विंटल के बीच बेचने को मजबूर किया जा रहा था। यहां तक कि राज्य सरकार के वादे के मुताबिक प्रति क्विंटल एक हजार रुपये क्षतिपूर्ति मिलने के बाद भी किसानों को प्रति क्विंटल 600 रुपये या उससे कुछ ज्यादा घाटा था। इससे सूरजमुखी उत्पादकों में वाजिब गुस्सा था। सूरजमुखी की समर्थन मूल्य पर खरीद से शुरुआती इनकार, फिर 'उचित' मूल्य भुगतान का समझौता, और वह भी प्रदर्शनकारी किसानों के सड़कों पर उतर आने के बाद- यह किसानों के विरुद्ध सरकारों का पूर्वाग्रह को ही दर्शाता है। हालांकि इसकी जड़ें 1930 के दशक में उन दिनों तक जाती हैं जब उद्योगपतियों का एक बॉम्बे क्लब नामक समूह कभी यह यकीनी बनाने की दिशा में काम करता था कि खाद्य पदार्थों की कीमतें कम रखी जाएं ताकि वेतन कम रखे जा सकें। दरअसल बरसों से कृषि को दरिद्र बनाए रखकर खाद्य कीमतों को कम रखने की यही आर्थिक सोच हावी रही है। इसलिए आर्थिक सुधारों को व्यवहार्य बनाए रखने को या कहें कि कंपनियों को मुनाफा कमाने की इजाजत देने के लिए कृषि को दांव पर लगाया जा रहा है। हरियाणा का घटनाक्रम समझ से परे है कि पहले तो किसानों की उपयुक्त रेट की न्यायोचित मांग को नकार दिया गया और फिर सड़कों पर हंगामे के बाद सही कीमत देने को राजी भी हो गये। यह शुरू में ही क्यों नहीं किया गया? एमएसपी किसानों का हक है। यदि सरकार ने अपना कर्तव्य निभाया होता तो कोई वजह ही नहीं थी कि किसान राजमार्ग पर आकर विरोध प्रदर्शन करते। वास्तव में, मैंने आज तक कभी किसी कॉरपोरेट दिग्गज को अपने बेड लोन की माफी को लेकर नई दिल्ली के जंतरमंतर पर प्रदर्शन करते नहीं देखा? यह भी कि दस वर्षों के 12 लाख करोड़ रुपये के बीमार कॉर्पोरेट ऋण को बिना किसी विरोध बैंक के रजिस्टर से कैसे हटा दिया गया? इतना ही काफी नहीं, आरबीआई ने जानबूझकर कर्ज न चुकाने वालों के लिए 'समझौता निपटान' की इजाजत दी है, जिनके पास भुगतान सामर्थ्य है लेकिन वे नहीं करते ताकि एक वर्ष बाद नए सिरे से लोन ले सकें। जबकि कृषि कर्ज पर डिफ़ॉल्टर हो जाने पर किसानों को नियमित तौर पर सलाखों के

पीछे भेजा जाता है, जाहिर है आरबीआई चहेते पूंजीपतियों के लिए 'कवच' का काम करता है। मुझे खुशी है, ऐसे में जब मुख्यधारा के अर्थशास्त्री इस विकृति को लेकर साफ तौर पर चुप हैं, बैंक संघ खुले तौर पर आरबीआई की मंशा पर सवाल उठा रहे हैं। यह भेदभाव आर्थिक विश्लेषण में भी स्पष्ट दिखता है। बीती 14 जुलाई को एक अंग्रेजी दैनिक में एक लेख 'एमएसपी में मामूली वृद्धि सरकार द्वारा एक सख्त कदम है' प्रकाशित हुआ जिसमें दो अर्थशास्त्रियों ने 2023-24 विपणन सीजन के लिए खरीफ फसलों के लिए एमएसपी में 7 प्रतिशत की अतिरिक्त मामूली बढ़ोतरी से उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) में खाद्य टोकरी के लिए भारित औसत की गणना की है। लेकिन यह सही नहीं है क्योंकि विपणन सत्र अभी शुरू होना है, और यह देखते हुए कि साल में एमएसपी पर केवल 14 फीसदी फसलें खरीदी जाती हैं, कीमतों में वृद्धि को पूरी फसल से जोड़ना जल्दबाजी होगी। शेष 86 फीसदी फसलों का ज्यादातर कारोबार एमएसपी से कम कीमत पर होगा। इसका मतलब यह भी कि चुनाव पूर्व वर्षों में एमएसपी मूल्य वृद्धि के जरिये देखी गई बड़ी बढ़ोतरी भी गलत थी। दूसरी ओर, जो लोग किसानों को दोषी ठहराते हैं कि वे बिना सोचे-विचारे जल्दबाजी में राजमार्गों और रेल पटरियों को बाधित करके बैठ जाते हैं, उन्हें भी अपना पूर्वाग्रह त्याग देना चाहिए। सोशल मीडिया मंचों पर सक्रिय आलोचक अक्सर प्रदर्शनकारी किसानों पर भड़कते हैं। जैसे कि किसानों को हाइवे जाम करके दूसरों को सताने में खुशी मिलती हो। ऐसी आलोचना अनुचित ही होगी, और इससे शहर में जन्मे-पले लोगों की ग्रामीण देहात के बारे में समझ का पता चलता है। देश भर में किसानों के विरोध प्रदर्शनों की मामला-दर-मामला जांच करें, और आप देखेंगे कि उनके साथ कैसे ज्यादती हुई। वे एक आर्थिक षड्यंत्र के शिकार हैं जिसका मकसद असल में उन्हें ज़मीन से बेदखल करना है। मुख्यधारा के अर्थशास्त्रियों और नौकरशाही ने शायद ही कभी किसानों की भूमिका को भूमि बैंक और श्रम बैंक से परे देखा हो। दरअसल, पैदावार के सही दाम प्राप्ति के लिए किसानों के पास लट्ठ का सहारा लेने के अलावा अन्य कोई विकल्प कम ही है। यहां बड़ा सवाल यह उठता है कि नीति निर्माताओं में किसानों को गारंटीशुदा कीमत प्रदान करने को लेकर अनिच्छा क्यों हैं? प्रमुख तौर पर यह इसलिए है कि कॉलेज पाठ्यक्रम में इकोनॉमिक 101 यानी अर्थशास्त्र की शुरुआती मूल अवधारणाओं ने हमें यह यकीन करने के लिए मानसिक तौर पर तैयार किया है कि बाजार के तहत ही सर्वोत्तम कीमत प्राप्त होती हैं। वास्तव में, निराशाजनक ही है जब कुछ जनमत बनाने वाले भी किसानों को सही कीमत का आश्वासन प्रदान करने की जरूरत को चुनौती देते हैं। यदि किसानों के लिए सूरजमुखी के लिए 6,400 रुपये प्रति क्विंटल के एमएसपी के बजाय 4,800 रुपये प्रति क्विंटल बाजार भाव प्राप्त करना ठीक है, तो इसी तर्ज पर अगर शीर्ष नौकरशाहों को जूनियर अधिकारियों के बराबर वेतन दिया जाएगा तो वे उस पर कैसे प्रतिक्रिया देंगे। इसी तरह, अगर सेना के सबसे वरिष्ठ अफसरों को दो रैंक से नीचे के अधिकारियों के बराबर वेतन मिले, तो जोरदार विरोध होगा। दरअसल किसान भी तो उसी समाज का हिस्सा हैं। उन्हें भी तो अपने परिश्रम के बदले पर्याप्त भुगतान की आवश्यकता है, वह भी इतना तो होना चाहिये जिससे उन्हें आर्थिक तौर पर व्यवहार्य और लाभकारी आमदन प्राप्त हो सके। जबकि 1970 से 2015 तक के 45 वर्ष की अवधि में सरकारी कर्मचारियों के मूल वेतन में 120 से लेकर 150 गुणा तक बढ़ोतरी हुई वहीं इसके मुकाबले, यदि गेहूं के एमएसपी को संकेतक मान लिया जाये, कृषि आय में वृद्धि केवल 19 गुना ही हुई है। आमदनी में यह भारी अंतर उस सोचे-समझे प्रयास की ओर इशारा करता है जिसके तहत कृषि आय को व्यापक आर्थिक संकेतकों के दायरे में रखा गया। दूसरे शब्दों में, खाद्य मुद्रास्फीति कम रखने के लिए खाद्यान्न कीमतों को कम रखकर किसान पारंपरिक तौर पर आर्थिक स्थिरता बनाए रखने का बोझ उठाते रहे हैं।

पहले खुद की खातिरदारी... बाद में यारी, रिश्तेदारी

प्यारेलाल कट्टर सिद्धांतजीवी माने जाते हैं। वे हर बात में सिद्धांत का उल्लेख करते हैं। वे सिद्धांत को ओढ़ते हैं, बिछाते हैं और उसी पर सोते हैं। प्यारेलाल जैसे लोगों ने अपने-अपने हिसाब से सिद्धांत बना रखे हैं। जैसे किसी का सिद्धांत है कि सूर्योदय से पहले बिस्तर से उठ जाऊंगा तो किसी अन्य का सिद्धांत है कि सूर्योदय के बाद ही बिस्तर छोड़ूंगा। अब कुछ भी हो जाए दोनों किस्म के जीव अपने सिद्धांत पर अड़े रहते हैं। कुछ लोगों का सिद्धांत है कि चाय, नाश्ता, भोजन के लिए अपनी जेब ढीली नहीं करेंगे। इसके लिए उन्हें कितनी भी बदनामी झेलनी पड़े और उनकी खिल्ली उड़ाई जाए, वे अपने इस सिद्धांत से टस से मस नहीं होते।

प्यारेलाल शासकीय नौकरी में हैं। उन्होंने रिश्वत लेकर ही काम करने का सिद्धांत बना रखा है। उनकी टेबल से जो भी दस्तावेज या फाइल गुजरती है, उसे वे बिना खर्चा-पानी के निकलने नहीं देते हैं। इसके लिए कोई पहचान, यारी-दोस्ती या रिश्तेदारी भी कोई मायने नहीं रखती है। सारे रिश्ते-नाते एक तरफ हैं और उनका रिश्वत लेकर काम करने का सिद्धांत दूसरी तरफ। लेकिन जब उनका काम बिना रिश्वत दिए कहीं अटकता है तो वे पतली गली से रास्ता निकाल लेते हैं। वे इस काम के लिए एजेंट नियुक्त कर देते हैं। वह उनके लिए देन-लेन करके काम निपटा देता है। यानी प्यारेलाल का काम भी हो जाता है और उनका सिद्धांत भी कायम रहता है। यानी सिद्धांत उनके लिए हाथी के दांत की तरह हैं।

जब उनके बेटे के विवाह का अवसर आया तो स्वाभाविक ही कन्याओं के पिता उनके पास चर्चा के लिए आने लगे। उन्होंने सिद्धांतजीवी होने के नाते साफ-साफ बता दिया कि लड़के की पढ़ाई-लिखाई में इतनी राशि खर्च हुई है। मकान की मरम्मत करवानी है और खेत में बोरवेल भी करवाना है। कुल इतना खर्च तो लगेगा ही। उन्होंने जमकर सौदेबाजी की और इस कीमत पर बहू को ले आए। धन लेकर आई बहू ने क्या रंग दिखाए और बाद में क्या हुआ, यह अलग विषय है।

जब प्यारेलाल की बेटी के विवाह की बात आई तो उनका कुमकुम कन्या का सिद्धांत प्रबल हो गया। वे अपने पास सब कुछ होने के बावजूद कन्या को नई गृहस्थी जुटाने के लिए कुछ भी नहीं देना चाहते थे। वे घोर दहेज विरोधी थे और कुछ उपहार देने में उनका सिद्धांत आड़े आ रहा था। उनके इसी रवैये के चलते उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

पेज-5

राधिका को हिट फिल्म की तलाश

सरकारी जवाबदेही व समाज की संवेदनशीलता जरूरी

कोई भी दिवस किसी समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए घोषित किया जाता है। पिछले दिनों अंतर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस मनाया जाना बताता है कि दुनिया में बुजुर्गों की स्थिति विकट है। हेल्पेज इंडिया का 60 से 90 वर्ष तक की आयु की शहरी-ग्रामीण करीब आठ हजार महिलाओं पर अध्ययन गहरे निहितार्थ?सामने लाता है।?अध्ययन में शामिल बीस राज्यों, पांच महानगरों और दो केंद्रशासित प्रदेशों की महिलाओं में से सोलह प्रतिशत ने बताया था कि उन्हें मारपीट सबसे अधिक झेलनी पड़ती है। साथ ही तमाम तरह की बदसलूकी जैसे कि बात-बात पर अपमान, गाली-गलौज , खाना न देना, मनोवैज्ञानिक मसले आदि शामिल हैं।

चौंकाने वाली बात यह कि सर्वे में शामिल चालीस प्रतिशत महिलाओं ने बुरे व्यवहार के लिए बेटों को जिम्मेदार माना। इकत्तीस प्रतिशत ने रिश्तेदारों के द्वारा हिंसा झेली तो सत्ताइस प्रतिशत ने इसके लिए बहुओं को जिम्मेदार माना। ज्यादा चिंताजनक बात यह कि ये महिलाएं परिवार और आसपास के लोगों से इतना डरती भी हैं कि पुलिस को बुरे व्यवहार की सूचना नहीं देती हैं।

विडंबना है कि यह सिर्फ महिलाओं की ही समस्या नहीं है, बड़ी संख्या में पुरुष भी पीड़ित हैं। इस तरह का प्रामाणिक अध्ययन जरूर किया जाना चाहिए। सरकारी बेरुखी के बीच देश में बुजुर्गों की संख्या दस करोड़ के आसपास बताई जाती है। वे वोटर्स भी हैं लेकिन किसी राजनीतिक दल की चिंता के केंद्र में नहीं दिखाई देते। उन्हें तो एक तरह से फ्यूज बल्ब मान लिया जाता है जो किसी के काम के नहीं हैं, न समाज के, न सरकार के, न दो पैसे कमाने लायक बल्कि अपने हर काम के लिए दूसरों पर निर्भर। तो जो निर्भर है भला उसकी मदद कोई

क्यों करे। इसीलिए बुजुर्गों के प्रति बदसलूकी बढ़ती जाती है और हम आंखें मूंदें रहते हैं। मीडिया भी इनकी समस्याओं की अनदेखी करता है क्योंकि बुजुर्गों के झुर्रीभरे चेहरे चैनल्स की चमकदार और युवा दुनिया के किस काम के।

बहुत दिन पहले एक वीडियो देखा था कि एक बेहद कृशकाय बूढ़ी महिला को एक युवा स्त्री घसीटकर लाती है और सड़क किनारे उसे उठा-उठाकर पटकती है, बार-बार। पीटती जाती है। बूढ़ी महिला चीख-चिल्ला रही है। रो रही है। वह बचने की कोशिश भी कर रही है, मगर बच नहीं पाती। उसे बचाने का प्रयास कोई राहगीर नहीं करता। बुढ़िया चिल्लाती रहती है, लेकिन लगता है कि सड़क से गुजरते लोग बहरे हो गए हैं। यह बहरापन, हमें किसी से क्या मतलब की भावना और दूसरे के दुःख से निरपेक्षता को दर्शाता है, जो हिंसा करने वालों का हौसला बढ़ाता है। और जब तक हम खुद हिंसा का शिकार न हों, हमें चिंतित भी नहीं करता। जो स्त्री उस बूढ़ी महिला को पीट रही थी, वह निश्चित तौर पर उसके परिवार की सदस्य ही रही होगी। सवाल उठा कि बाहर के हिंसक व्यवहार से तो शायद निपटा भी जा सके, लेकिन परिजनों के हिंसक व्यवहार का निवारण कैसे हो। बुजुर्गों के प्रति अपनों द्वारा हिंसा, भेदभाव, प्रापर्टी अपने नाम कराकर उन्हें बेदखल कर देने आदि की खबरें लगातार आती रहती हैं। लेकिन शायद ही कोई इन पर ध्यान देता है। बल्कि सरकारों में बड़े पद पर बैठे बहुत से लोग ही बुजुर्गों को देश की अर्थव्यवस्था पर बोझ बताने लगते हैं। हां अदालतें जरूर अकसर बुजुर्गों के पक्ष में फैसले देती हैं, मगर अदालतों तक कितने बुजुर्ग पहुंच पाते हैं। कितनों के शरीर में इतना दम होता है और संसाधन भी कि वे अदालतों तक पहुंच सकें।

शहरों में ऐसे बुजुर्ग भी बड़ी संख्या में मिलते हैं जो स्वस्थ हैं। आर्थिक संसाधनों की भी कोई कमी नहीं, लेकिन उनके पास समय काटने का कोई साधन नहीं। जिनके बच्चे साथ रहते हैं, चाहे घर बुजुर्गों का ही हो, वहां कोई सम्मान नहीं। यह भावना भी बराबर बनी रहती है जैसे कि बच्चे उनके साथ रहकर उन पर बड़ा भारी अहसान कर रहे हों। कई बार तो बच्चे बुजुर्गों का सारा पैसा हड़प लेते हैं और उन्हें असहाय छोड़ देते हैं।

ऐसे में यदि उनके साथ मारपीट और हिंसा भी होने लगे और अस्वस्थ होने की अवस्था में इलाज और देखभाल की भी कोई व्यवस्था न हो तो ये लोग कहां जाएं? सरकारें यदि चाहें तो इनके अनुभव का लाभ उठा सकती हैं। इनकी योग्यता के अनुसार इन्हें काम देकर समाज में इनकी भूमिका बढ़ सकती है। साथ ही इनका आत्मविश्वास भी बढ़ सकता है। हां, जो इनके प्रति बुरा सलूक करे, उससे भी सरकार निपटने की व्यवस्था करे, पुलिस बदसलूकी का संज्ञान ले, वरना तो इनका जीवन ही दूभर हो जाएगा।

कुछ साल पहले एक मित्र अपना मकान बेचकर बेटे के पास अमेरिका चले गए। अभी गए एक महीना भी शायद नहीं बीता था कि उनका फोन रात के बारह बजे आया। उनका कहना था कि जब उनके बहू-बेटे दफ्तर चले गए हैं, तब वे फोन कर रहे हैं। जितनी जल्दी हो सके लौटना चाहते हैं। क्या उनके लिए एक किराए के मकान की व्यवस्था हो सकती है। बोले बच्चों के कहने पर कभी अपनी छत नहीं छोड़नी चाहिए। आप कहीं के नहीं रहते। ऐसे किस्से इन दिनों आम हो चले हैं। विडंबना कि देश में ऐसी बेशुमार कहानियां बिखरी पड़ी हैं जहां सब कुछ होते हुए भी उनके परिजनों ने उनके अपने ही घर से बाहर कर दिया।

बाहुड़ा जात्रा में लाखों श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़ महाप्रभु पहुंचे श्री मंदिर

निशान ढोल बाजे डीजे के धून में थिरके भक्त श्रद्धालु बोल कालिया के जयघोष से गूंजा गांव

संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद। जिले के मैनपुर विकासखंड अंतर्गत धर्म नगरी

ग्राम झरगांव में श्री जगन्नाथ जी के पवित्र रथयात्रा महोत्सव का बड़ी ही धूमधाम से मनाया गया आज आषाढ़ शुक्ल दशमी को भगवान जी का प्रात काल वेद मंत्रों से पुजा अर्चना किया गया और 10बजे महाप्रभु को 56भोग अर्पित किया गया और महाप्रभु जी के महाप्रसाद को सभी भक्तों को वितरण किया गया और 12बजे से महाप्रभु श्रीं बलराम महाबाहु मां सुभद्रा के दर्शन हेतू लाखों की संख्या में भक्त श्रद्धालु उपस्थित रहे और शाम 4बजे श्रीमद्भागवत पुराण,श्री बलराम जी, और मां सुभद्रा नंदीघोष में रथारूड़ हुए और फिर महाप्रभु श्री जगन्नाथ जी अपने भक्तों के बीच लीला करते आनंद के साथ श्री जगन्नाथ जी रथारूड़ हुए और भक्तों ने बोल कालिया और हर हर महादेव के जयघोष से गूंजा संकीर्तन मंडली द्वारा भजन कीर्तन करते रथ के आगे आगे गांव सभी भक्त रथ के साथ साथ चलने लगे और डीजे के धुन में युवा वर्ग थिरके झरगांव गांव मार्ग में समस्त गांववासी अपने घर के आंगन में दीप रंगोली सजाकर भगवान का स्वागत किये और श्री मंदिर पहुंचने पर मां महालक्ष्मी जी ने श्री जगन्नाथ जी को श्री मंदिर में प्रवेश करने मना किया वहीं बलराम जी और मां सुभद्रा को प्रवेश के लिए नहीं रोका फिर महालक्ष्मी जी और महाप्रभु में कलह हुआ तत्पश्चात श्री जगन्नाथ जी समर्पित हुए तो महालक्ष्मी जी प्रसन्न होकर फिर कालिया प्रभु ने मिठाई खिलाकर प्रेम पूर्वक श्री मंदिर प्रवेश किया गया फिर निज रत्न सिंहासन में भगवान विराजमान हुए और फिर महाबाहु की आरती स्तुति कि और भक्तों को प्रसाद वितरित किए गये।

स्वच्छता के लिए हम सभी को मिलकर लोगों को करना होगा जागरूक प्राकृतिक पर्यावरण के लिए हम सभी को करना चाहिए वृक्षारोपण: राकेश रुस्तम सिंह

पोरसा। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय गांधीनगर पोरसा सेवा केंद्र के माध्यम से आज प्रकृति के बीच पर्यटक स्थलों पर पहुंचकर स्वच्छता अभियान वृक्षारोपण और व्यसन नशा जैसे बीड़ी सिगरेट शराब गुटका तंबाकू चरस गांजा नशे वाली वस्तुओं को लेकर विशाल कार्यक्रम का आयोजन मितावली में किया गया तथा ककनमठ सिहोनिया जैन तीर्थ मितावली पडावली बटेश्वर शनि देव मंदिर आदि स्थानों पर जाकर स्वच्छता व पर्यावरण नशा मुक्त हो भारत का संदेश देते हुए ब्रह्माकुमारी रेखा बहन ने कहा जिस प्रकार से हम प्रतिदिन की दिनचर्या में अपने तन को स्वच्छ रखते हैं उसी प्रकार हमें अपने मन को भी साफ सुथरा रखना चाहिए क्योंकि कहते हैं जहां पर स्वच्छता होती हैं वहां पर ईश्वर होते हैं भगवान का वास होता है इसलिए हम सभी को स्वच्छता को अपना लेना चाहिए हमारी भारत सरकार ऐसे कई अनेक योजनाओं को लेकर अभियान चला रही है हम सभी को मिलजुलकर इस कार्य में भाग लेना चाहिए सभी को स्वच्छता के साथ-साथ व्यसन और अधिक से अधिक लोगो को पेड़ पौधे लगाने के लिए जागरूक करना चाहिए विशेष रुप से आए हुए मुख्य अतिथि राकेश रुस्तम सिंह उद्योगपति पूर्व जिला पंचायत सदस्य इस कार्यक्रम में मौजूद रहे उन्होंने अपने विचार रखते हुए कहा ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन अवश्य होना चाहिए प्रकृति के बीच इन कार्यक्रमों को करने से खुश होती है हमें जल वायु अग्नि पृथ्वी के लिए शुभकामनाएं शुद्ध रहे स्वच्छ रहे इन्हें भी हमें अपने बच्चों की तरह पालना चाहिए लोगो को नसे की लत से दूर रहना चाहिए हमारे देश का युवा अगर इन बुरी आदतों से दूर रहेंगे तो निश्चित ही हमारा भारत एक स्वर्णिम भारत बनेगा कार्यक्रम में श्री श्री 1008 बालक दास जी महाराज मुख्य अतिथि राकेश रुस्तम सिंह विशिष्ट अतिथि भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष पोरसा राम कुमार गुप्ता अध्यक्षता जबर सिंह हसाना पूर्व मंडी अध्यक्ष बीके रेखा बहन पोरसा जगमोहन सिंह कौरव पूर्व सरपंच नरेश कौरव अनीता कौरव महिला मोर्चा अध्यक्ष बंदना गुप्ता लायंस क्लब अध्यक्ष महेश सेमिल ब्रजकिशोर सिंह तोमर रामबहादुर सिंह ध्रुव कौरव राम लखन कौरव राहुल कौरव कालीचरण प्रजापति साधु प्रजापति नंदा कौरव बल्लू प्रजापति आदि

देवभोग नेशनल हाईवे पर मेटाडोर ने बाइक सवार को मारी जोरदार टक्कर, मौके पर ही मौत

संवाददाता हेमचंद नागेश

गरियाबंद। देवभोग रोड पेंड्रा मोड़ के पास एक मेटाडोर और मोटरसायकल सवार ज़बरदस्त भिंडत हो गई है हादसा इतना भयानक था कि मोटरसायकल सवार व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई है, रायपुर की ओर जा रहे मेटाडोर क्रमांक सीजी 10 ए टी ने विपरीत दिशा से आ रहे बाइक को टक्कर मार दी. मृतक का नाम जोहन बाल्मिकी बताया जा रहा है, हादसा नेशनल हाइवे में बाजघाटी मोड के आगे पेंड्रा रोड के पास लगभग साढ़े 12 बजे हुआ. वाहन के टक्कर से सिर में गंभीर चोंट आई. भेजा निकल कर बाहर आ गया था. पैर और हाथ की हड्डियां भी टूट गई थी. मौके पर ही शख्स ने दम तोड़ दिया. मैनपुर पुलिस को सूचना मिलते ही. मैनपुर पुलिस ने नाकेबंदी कर वाहन चालक को गिरफ्तार किया. साथ ही वाहन को जब्त कर लिया है. वही मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है जानकारी के अनुसार मृतक बाजार बाजार और गांव-गांव जाकर मिठाई बेचने का काम करता था।

कलेक्ट्रेट रीवा के समक्ष जारी महापड़ाव आंदोलन स्थल में संयुक्त किसान मोर्चा ने महिला आंदोलनकारी शुकवरिया बसोर की नातिन अंजली की रचाई शादी

रीवा। कलेक्ट्रेट रीवा के समक्ष विगत 9 माह से एसकेएम की अगुवाई में जारी सुअर पशुपालकों के महापड़ाव आंदोलन स्थल पर संयुक्त किसान मोर्चा ने गरीब आंदोलनकारी परिवार की शादी रचाने का ऐतिहासिक कार्य किया है मोर्चा के संयोजक शिव सिंह ने बताया कि बसोर समाज का सुअर पशुपालन ही रोजी-रोटी का जरिया था जिन्हें शिवराज की तानाशाह हुकूमत के नुमाइंदों ने अफ्रीकन स्वाइन फ्लू बीमारी के चलते उनके हजारों सुअरों को बिना किसी इलाज के इंजेक्शन देकर मरवाने का काम किया बहुत सारे सुअर बीमारी से मर गए सरकार के कानून में मुआवजे का प्रावधान होने के बाद भी उन्हें मुआवजा नहीं दिया गया आंदोलनकारियों के पास रोजी रोटी का संकट उत्पन्न है वह लगातार मुआवजे की मांग को लेकर कलेक्ट्रेट रीवा के समक्ष 6 अक्टूबर 22 से डेरा जमाए हुए हैं उनका कहना है कि भले ही हमें भी कुर्बानी देना पड़े लेकिन बिना मुआवजा के यहां से नहीं हटेंगे डटे रहेंगे क्योंकि उनके पास अब कुछ बचा ही नहीं है वह इस देश का सबसे गरीब तबका है आंदोलनकारियों ने एसकेएम के सहयोग से अपने सभी पारिवारिक आयोजन धरना स्थल से ही करने के निर्णय लिए थे जिससे आज महिला आंदोलनकारी शुकवरिया साथ आंदोलन स्थल में संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा के समक्ष फेरे लेकर रचाई गई एसकेएम ने

बसोर की नातिन अंजली बसोर की शादी ग्राम उचेहरा सतना निवासी अच्छेलाल बसोर के पुत्र पंचमलाल उर्फ आशीष बसोर के वर वधु को संविधान भेंट किया साथ ही किसान मोर्चा के साथी घराती बन उपहार भी भेंट किए उक्त अवसर पर एसकेएम परिवार की ओर से बद्री प्रसाद कुशवाहा मास्टर बुद्धसेन पटेल रामजीत सिंह उमेश पटेल जिपंस लालमणि त्रिपाठी शोभनाथ कुशवाहा इंद्रजीत सिंह शंखू अभिषेक पटेल संतकुमार पटेल जयभान सिंह शेषमणि पटेल केके शुक्ला प्रदीप पांडे संजय निगम रोहित तिवारी चेतना द्विवेदी फौजी रमेश पटेल सुतीक्षण द्विवेदी मानवती बृजेंद्र सिंह सुग्रीव सिंह मिथिला सिंह दिनेश ओबीसी पप्पू कनौजिया लोकनाथ पटेल पूर्व सरपंच रामायण पटेल बृजेंद्र कुमार सोनी गुरुचरण कुशवाहा पवन पटेल अरुण पटेल गोलू विवेक पटेल भक्त प्रहलाद कुशवाहा जेडीएस अध्यक्ष मो आबिद राजू आंदोलनकारी प्रदीप बसोर शकोचिल प्रसाद बसोर राजाराम उर्फ राजा बसोर बाबूलाल बंसल पार्षद शंकरलाल मलखान बंसल गीता राजेश उर्मिला आदि सैकड़ों आंदोलनकारी उपस्थित रहे कार्यक्रम में मोर्चे के संगठन भारतीय किसान यूनियन टिकैत मध्य प्रदेश किसान सभा अखिल भारतीय किसान सभा राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ शहीद राघवेंद्र सिंह किसान संघर्ष समिति सहित अन्य संगठनों का योगदान सराहनीय रहा ।

भाजपा नगर मंडल पोरसा ने वार्ड क्रमांक 12 व 13 मैं घर घर जाकर किया जनसंपर्क योजनाओं की दी जानकारी

पोरसा। भारतीय जनता पार्टी नगर मंडल पोरसा के द्वारा महा जनसंपर्क अभियान के अंतर्गत कार्यकर्ताओं के साथ घर घर जाकर जनसंपर्क किया एवं केंद्र व प्रदेश सरकार की योजनाओं के पत्रक बांटे गए व स्टिकर घर-घर चिपकाए गए जनसंपर्क अभियान के दौरान नगर मंडल अध्यक्ष राम कुमार गुप्ता ने बताया कि देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी के 9 वर्ष कार्यकाल को सफलतम पूर्ण होने पर भारतीय जनता पार्टी के द्वारा घर-घर जनसंपर्क अभियान चलाया जा रहा है जिसमें पोरसा शहर के प्रत्येक वार्ड में यह जनसंपर्क चलाया जाएगा एवं सभी कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों से संपर्क करेंगे कार्यक्रम के अवसर पर भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष रामकुमार गुप्ता घर-घर संपर्क संयोजक शिवराज सिंह तोमर महा जनसंपर्क अभियान संयोजक अरविंद तोमर सह संयोजक राजीव शर्मा परमाल शर्मा योगेश शर्मा महामंत्री कमल जाटव संदीप उपाध्याय महेश सेमिल सुरेश जाटव नत्थीलाल राठौर मंजू बंसीलाल जाटव संतोष उपाध्याय बूथ अध्यक्ष कल्लू उपाध्याय शिवकांत गुप्ता राजेश ओझा आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

गुरुतत्व श्री महालक्ष्मी, महासरस्वती व महाकाली की शक्ति के समन्वय से बना है : श्री माताजी

गुरु की महिमा हमारे शास्त्रों में ईश्वर से अधिक मानी गई है क्योंकि ईश्वर मनुष्य को जन्म देता है, उसका निर्माण करता है व गुरु मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करता है वह उसे पुनर्जन्म प्रदान करता है। अतः गुरु के मार्गदर्शन व श्री लक्ष्मी नारायण की कृपा के बिना भवसागर को पार करना असंभव है भवसागर से पार हुए बिना आत्मा का परमशक्ति से संयोग होना असंभव है। सहजयोग संस्थापिका आदिशक्ति स्वरूपा श्री माताजी निर्मला देवी जी समस्त गुरुओं की भी गुरु है व उनके द्वारा स्थापित सहजयोग मानव को भवसागर के पार ले जाने का अत्यंत ही सुगम मार्ग है। श्री माताजी के अनुसार, सदगुरु का स्थान अपने शरीर में है, जो हमारे शरीर में हमारी नाभि के चारों तरफ है ।... सदुरु का स्थान आपमें बहुत पहले से स्थापित है । गुरुतत्व अनादि है आपमें अदृश्य रूप से तीन मुख्य शक्तियाँ कार्यान्वित हैं - महाकाली, महासरस्वती एवं महालक्ष्मी की शक्ति । हमारा गुरुतत्व इन तीनों के समन्वय से बना है, यह गुरुतत्व हमारे अन्दर परमेश्वर ने बहुत ही नूतन स्वरूप में स्थापित किया है । (प पू श्री माताजी, 25/7/1979) गुरु शब्द का अर्थ है

गुरुत्व । आपके गुरुपद की द्वितीय अवस्था में गुरुत्व की अभिव्यक्ति होना आवश्यक है । गुरुत्व तो आपके अन्दर है , ज्योंही आप साक्षी बनते हैं आपका गुरुत्व स्वतः ही प्रकट होने लगता है । यह क्रोध या गम्भीरता के रूप में नहीं प्रकट होता है , इसकी अभिव्यक्ति तो इस प्रकार होगी कि सभी कुछ अत्यन्त गरिमामय और तेजपूर्ण बन जाएगा। (प पू श्री माताजी, 19/7/1992) कहते हैं । जब आपका विश्वास पूर्णतया स्थिर हो जाता है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा हैं और मैं उनका दूत हूँ और जब आपमें यह विश्वास पूर्णतया दृढ़ हो जाता है तब आप गुरुपद पर आरूढ़ हो जाते हैं । (प पू श्री माताजी,19/7/1992) इसीलिए श्री माताजी सहजयोग में कुंडलिनी जागरण से पूर्व आपको अपने स्वयं के गुरु होने का आशीर्वाद प्रदान करती हैं। जिससे आप सदैव आनंदमय व साक्षी स्वरूप रहते हुए परम चैतन्य से एकाकारिता को स्थापित कर सकें। आत्म ज्ञान के प्रकाश में कुंडलिनी शक्ति की उर्जा द्वारा प्रेममय व करुणामय तरीके से अनेकानेक साधकों को भवसागर से मुक्ति का मार्ग दिखा सकें। कुंडलिनी जागरण द्वारा आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने हेतु टोल फ्री नम्बर 18002700800 पर सम्पर्क करें।

वित्तीय अनियमितता की दोषी पाई गई कोटा जनपद पंचायत की सरपंच, पद से हटाई गई,6 साल तक चुनाव लड़ने से वंचित

वित्तीय अनियमितता की दोषी पाई गई कोटा जनपद पंचायत की सरपंच, पद से हटाई गई,6 साल तक चुनाव लड़ने से वंचित

कोटा । जनपद पंचायत अन्तर्गत ग्राम पंचायत लिटिया के सरपंच ने अपने कार्यकाल में वित्तीय अनियमितता की है। इस मामले की जांच चल रही थी। सुनवाई पूरी होने के बाद सरपंच दुलेश्वरी नेताम वित्तीय अनियमितता की दोषी पाई गई। इस पर कोटा एसडीएम हरिओम द्विवेदी ने कार्रवाई करते हुए दुलेश्वरी नेताम को सरपंच पद से हटाने का आदेश जारी किया है।अनुविभागीय अधिकारी कोटा ने वित्तीय अनियमितता करने वाले दोषी ग्राम पंचायत लिटिया के सरपंच को तत्काल हटाने का आदेश दिया गया है। ग्राम पंचायत सरपंच दुलेश्वरी नेताम पर लाखों रुपए शासकीय राशि के अनियमितता की शिकायत कलेक्टर बिलासपुर जनदर्शन में ग्रामीणों ने की थी । इस मामले में जिले से जाँच टीम द्वारा जाँच कर रिपोर्ट सौंपी गई थी, एसडीएम कार्यलय में इसका कार्रवाई चल रही थी। महीनों भर मामला चलने के बाद राशि में गड़बड़ी का दोषी पाया है। इस आधार पर अनुविभागीय राजस्व कोटा ने वित्तीय अनियमितता करने का दोषी पाते हुए बर्खास्तगी आदेश जारी कर दिया गया है। आदेश दिनांक 21जून 2023 के अनुसार छत्तीसगढ़ पंचायत राज अधिनियम 1993 की धारा 39.40 के अंतर्गत दोषी पाते हुए सरपंच पद से हटाया जाता है। शासकीय राशि गबन मामले में सरपंच के उपर सख्त कार्रवाई की गई है। पद से हटाने के साथ ही इस अधिनियम के तहत अगामी 6 साल तक किसी प्रकार के चुनाव लड़ने पर प्रतिबंधित कर दिया है।

मॉडल स्कूल के स्वर्ण जयंती समारोह का प्रथम कार्यक्रम 1 जुलाई को होगा आयोजित

रीवा। प्रतिष्ठित मॉडल स्कूल की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर स्वर्ण जयंती कार्यक्रम का आयोजन भव्य रूप से आयोजित किया जा रहा है! जिसका प्रथम कार्यक्रम 1

जुलाई को मॉडल स्कूल परिसर में आयोजित किया जायेगा। उक्त आशय की जानकारी देने हेतु आज मॉडल स्कूल में पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया, जिसे प्रमुख रूप से विद्यालय के प्राचार्य पंकज शर्मा ने संबोधित किया! इस अवसर पर प्रमुख रूप से मॉडल स्कूल के एल्यूमिनी एसोसिएशन के उपाध्यक्ष नीरज खरे, सचिव दीपक निगम एवं सिद्धार्थ श्रीवास्तव उपस्थित रहे! प्राचार्य पंकज शर्मा द्वारा आगे जानकारी देते हुए बताया गया कि स्वर्ण जयंती वर्ष के प्रथम कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश शासन के स्कूल शिक्षा मंत्री माननीय इंदर सिंह परमार होंगे! अध्यक्षता पूर्व प्राचार्य मॉडल स्कूल के. एन. पांडेय करेंगे! साथ ही पूर्व मंत्री म. प्र. शासन एवं वर्तमान विधायक रीवा राजेंद्र शुक्ला, सांसद रीवा जनार्दन मिश्रा एवं उप सचिव माध्यमिक शिक्षा मंडल म. प्र. भोपाल हृदयेश श्रीवास्तव की गरिमामयी उपस्थिति रहेगी! पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए अन्य वक्ताओं ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती की वंदना से होगी! इसके बाद विद्यालय पत्रिका सृजन का विमोचन किया जायेगा! छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी जाएगी! मॉडल स्कूल पर लिखी गयी विशेष कविता का पाठ होगा! साथ ही विद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों का सम्मान भी किया जाएगा एवं विशेष रूप से माननीय शिक्षा मंत्री का उद्बोधन होगा!

रानीश्वर प्रखंड क्षेत्र में धूम धाम से मनाया ईद-उल-अजह (बकरीद) पर्व मागी अमन और चैन की दुआ

दुमका/झारखंड– दुमका जिले के रानीश्वर प्रखंड क्षेत्र के लकड़ाघाटी , रंगालिया, आसनबनी, धनभाषा डंगालपाड़ा, मोहूलबना, बनपाड़ा, कोलाकाटा, पाटजोड़, सुखजोड़ा, रानीश्वर, हामिदपूर,एक्कतला, डुमरा, जयतारा, सकाकान्द्र, बासकुली, डंगालपाड़ा, बिंदाबनी, तसरकट्टा, हकीकतपूर,भूयकूमरा आदी मुस्लिम समुदायों गावों में गुरुवार को ईद-उल-अजहा की नमाज ईदगाह एवं महजिदो में अदा की गयी । । बताते चलें कि ईद-उल-अजहा का अर्थ कुर्बानी वाली ईद से है। ईद-उल-फितर के बाद ये इस्लाम धर्म का दूसरा बड़ा त्योहार है। ये त्योहार रमजान महीने के खत्म होने के 70 दिन बाद मनाया जाता है। इस त्योहार को कुर्बानी के तौर पर मनाया जाता है। इस दिन बकरे की कुर्बानी दी जाती है। मुस्लिम समाज के लोगों के लिए बकरीद का त्योहार बहुत महत्वपूर्ण होता है। बकरीद मनाने के पीछे हजरत इब्राहिम के जीवन से जुड़ी हुई एक बड़ी घटना है। जो लकड़ाघाटी ईदगाह में मौलाना हाफिजूद्दीन अंसारी ने बिस्तार पूर्व दी ईदगाह में तक्रिर हजरत इब्राहिम खुदा के बंदे थे।खुदा में उनका पूर्ण विश्वास था। कहा जाता है कि अल्लाह ने एक बार पैगंबर इब्राहिम से कहा था कि वह अपने प्यार और विश्वास को साबित करने के लिए सबसे प्यारी चीज का त्याग करें। इसके बाद पैगंबर इब्राहिम ने अपने इकलौते बेटे की कुर्बानी देने का फैसला किया। इसके बाद जब पैगंबर इब्राहिम अपने बेटे की कुर्बानी देने जा रहे थे तभी अल्लाह ने उनके बेटे को बचा लिया और उसकी जगह पशु को कुर्बान कर दिया। तभी से बकरीद का त्योहार पैगंबर इब्राहिम को याद करने के लिए मनाया जाता है। मुस्लिम समाज के लोग हर साल इस त्योहार को बकरे की कुर्बानी देकर मनाते हैं। बकरीद के दिन बकरे को तीन भागों में बांटा जाता है,पहला भाग रिश्तेदारों,दोस्तों और पड़ोसियों को दिया जाता है। दूसरा हिस्सा गरीबों और जरूरतमंदों और तीसरा परिवार के लिए होता है।

कोटा के उमराव मिल में लगी आग, लाखों की कीमती इमारती लकड़ी हुई जल कर खाक

करगी रोड कोटा। कोटा नगर में उस समय हड़कंप मच गया जब पुरानी बस्ती स्थित केदार नाथ अग्रवाल,उमराव सा मिल में आग लग गई। यह घटना लगभग 12 बजे रात की बताई जा रही है। संचालक आनंद अग्रवाल को जानकारी रात 1:30 मिनट पर लगी । और देर रात दमकल की गाड़ी 3 बजे के आस पास कोटा पहुंची एवम घटना स्थल में पहुंचते लगभग आधा घंटे का समय लग गया और दमकल की गाड़ी 3:30 को पहुंची । तब तक लगभग लाखों की इमारती लकड़ी जल कर खाक हो चुकी थी ।इस घटना के विषय में जब सा मिल के संचालक आनंद अग्रवाल ने बताया कि लगभग पांच लाख रुपए

के लगभग की इमारती लकड़ी एव शेड जलकर खाक हो गया ।संचालक ने आरोप लगाया की मेन रोड से घटना स्थल सा मिल पहुंचते काफी देर हुई जिससे काफी हानि हुई है यदि दमकल और पहले समय पर पहुंच जाता तो शायद इतना नुकसान ना हुआ होता। उन्होंने यह भी आरोप लगाया की मेन रोड से पुरानी बस्ती रोड ने सभी ने रोड पर कब्जा कर रखा है । निर्माण कार्य होने पर लोग निर्माण सामग्री को रोड में ही डंप करवाते जिससे रोड पूरा जाम हो जाता है ।कई बार अधिकारियो को शिकायत करने के बावजूद इस रोड से अभी तक बेजा कब्जा नहीं हटाया गया । उन्होंने आगे बताया कि यह पुराने जमाने का आम रास्ता हुआ करता था तथा रतनपुर जाने का मुख्य मार्ग हुआ करता था ।बहरहाल देखना यह होगा कि कब अधियारियो के कानों में जूं रेंगेगी और कब किसी बड़ी अप्रिय घटना से बचा जा सकेगा.।

एस ए एफ एफ चैम्पियनशिप

आखिरी मिनट गोल से ड्रॉ हुआ भारत-कुवैत मुकाबला; 2 खिलाड़ियों को रेड कार्ड मिला

बेंगलुरु। भारत में साउथ एशियन फुटबॉल फेडरेशन (स्नस्नस्न) चैम्पियनशिप जारी है। बेंगलुरु के कंतीरवा स्टेडियम में भारत और कुवैत के बीच ग्रुप-एक का आखिरी मुकाबला 1-1 से ड्रॉ हुआ। सुनील छेत्री ने फर्स्ट हाफ के 45वें मिनट में गोल किया, लेकिन 90वें मिनट में भारत के अनवर अली ने ही कुवैत के लिए गोल कर दिया और स्कोर लाइन 1-1 पर समाप्त हुई। आखिरी मिनट गोल के बाद कुवैत के खिलाड़ियों ने भारत की बेंच के सामने एग्रेसिव सेलिब्रेशन किया। इससे पहले ही मामला बढ़ता सपोर्ट स्टाफ और रेफरी ने खिलाड़ियों को शांत करा लिया। लेकिन रेफरी ने विवाद में शामिल दोनों ही टीमों के खिलाड़ियों को एक-एक रेड कार्ड दिखा दिखा दिया। विवाद के कारण ही भारत के हेड कोच इगोर स्टीमाक को भी रेड कार्ड मिला। उन्हें टूर्नामेंट में भारत के पहले मैच में भी रेड कार्ड दिखाया गया था। अब वह 1 जुलाई को टीम इंडिया के सेमीफाइनल के दौरान स्टेडियम में नहीं आ सकेंगे। उन्हें पाकिस्तान के खिलाफ टीम के पहले मुकाबले में भी रेड कार्ड दिखाया गया था।

भारत-कुवैत मैच के साथ ही ग्रुप-ए के लीग मुकाबले खत्म हो गए है। भारत और कुवैत ने सेमीफाइनल में क्वालिफाई किया। इनका सामना ग्रुप-बी की टॉप-2 टीमों से होगा।

भारत ने शुरुआत से ही मैच पर पकड़ बनाए रखी। डिफेंडर्स ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कई बार कुवैत के खिलाड़ियों को बॉक्स के अंदर पहुंचने से रोका। पहले 20 मिनट में कुवैत ने गोल करने की कोशिश की लेकिन हर अटैम्प्ट नाकाम रहा। इसके बाद भारत ने कुवैत को बहुत कम मौके दिए। मैच के 45वें मिनट के एक्स्ट्रा टाइम में भारत को कॉर्नर मिला। कॉर्नर से अनिरुद्ध थापा ने बॉल ली और बॉक्स के बीच में खड़े सुनील छेत्री को दी। छेत्री ने बिना समय गवाएं राइट फुट से लेफ्ट साइड पर शॉट मार कर गोल स्कोर किया।

दूसरे हाफ के शुरुआती 5 मिनट में कुवैत ने 4 और भारत ने 3 फाउल किए। भारत और कुवैत ने लगातार शॉट मारने का अटैम्प्ट किया, लेकिन किसी को भी सफलता नहीं मिली। फाउल को ले कर मैच के 81वें मिनट में रेफरी के डिसीजन से नाखुश टीम इंडिया के क्रोएशियाई कोच इगोर स्टीमाक ने अपना विरोध जारी रखा। इस कारण उन्हें रेड कार्ड दे दिया गया। इसके बाद कुवैत और भारत के खिलाड़ियों में झड़प हो गई। जिस कारण भारत के रहीम अली और कुवैत के खिलाड़ी हमद-अल-कलफ को रेड कार्ड दिखाया गया। रेफरी के डिसीजन का विरोध करने पर टीम इंडिया के कोच इगोर स्टीमाक को रेफरी ने रेड कार्ड दिखाया। रेफरी के डिसीजन का विरोध करने पर टीम इंडिया के कोच इगोर स्टीमाक को रेफरी ने रेड कार्ड दिखाया। कुवैत और भारत के खिलाड़ी 81वें मिनट में मैदान पर भिड़ गए। मैच के 90+3वें मिनट में भारत के खिलाडी अनवर अली ने गलती से कुवैत के लिए गोल कर दिया। कुवैत के अलब्लौशी बॉल को भारत के गोल पोस्ट की ओर ले गए। उन्होंने क्रॉस की कोशिश की, लेकिन गेंद अनवर अली से टकराकर भारत के गोल में चली गई। 90वें मिनट में हुए इस गोल के कारण स्कोर 1-1 हो गया और इसी स्कोरलाइन पर मैच खत्म हो गया।

राजस्थान क्रिकेट के सौतेले-व्यवहार के कारण रवि ने बदला स्टेट

7 में से एक रणजी मैच में खिलाया, बिश्नोई ने लिखा- नई शुरुआत

जोधपुर। क्रिकेटर रवि विश्नोई ने अपने घरेलू स्टेट राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन का साथ छोड़ गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन को जॉइन कर लिया है। इसके पीछे वजह है 5 महीने पहले हुआ रणजी टूर्नामेंट। इसमें 7 में से 6 मैचों में रवि को राजस्थान टीम की प्लेइंग इलेवन में शामिल नहीं किया गया। हालांकि इस मामले में रवि से जुड़े लोग नियमों का हवाला दे रहे हैं। दो दिन पहले रवि ने गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन की जर्सी पहन सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर कर लिखा था- %नई शुरुआत%। रवि के इस फैसले के बाद एक बार फिर से नया विवाद शुरू हो गया है। सूत्रों की मानें तो राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के सौतेले व्यवहार के कारण रवि ने राजस्थान का घरेलू क्रिकेट छोड़ दिया। दरअसल, राजस्थान के रणजी मैचों में 7 में से रवि को सिर्फ एक मैच में मौका दिया। उसमें भी कुछ ही ओवर दिए गए। लास्ट मैच में रवि जैसा स्पिनर होने के बावजूद टीम के बाहर से स्पिनर को बुलवा कर मैदान में उतारा गया। सूत्रों के अनुसार यह भी सामने आया है कि मैनेजर पर रवि को पहले ही बाहर कर टीम बनाने का दबाव भी बनाया जाता था। इन सबसे आहत होकर रवि ने स्टेट ही बदल दिया। ये फोटो रवि ने करीब 20 घंटे पहले अपने इंस्टा पेज पर शेयर किया था। इस पर लिखा था- अहमदाबाद में एक अच्छी चाय की तलाश। ये फोटो रवि ने करीब 20 घंटे पहले अपने इंस्टा पेज पर शेयर किया था। इस पर लिखा था-अहमदाबाद में एक अच्छी चाय की तलाश। आरसीए के जॉइंट सेक्रेटरी राजेश बधाना का कहना है कि मेरी रवि से बात हुई थी। तब उसने यह बोला कि वह गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन जॉइन करने का पहले से ही मन बना चुका था। उन्होंने कहा कि रणजी में खेलने का मौका नहीं मिलने की वजह से उसने यह निर्णय लिया। बधाना ने बताया कि रवि राजस्थान से टी-20 और वनडे खेला है। लेकिन, रणजी में उसे मौका नहीं मिल पाया क्योंकि हमारे पास दो लेग स्पिनर थे। इसमें मानव सुथार अच्छा खेल रहा था और राहुल चाहर भी अच्छा स्पिनर है। तीन स्पिनर में एक को सफर करना ही पड़ता है और खिलाड़ी को खेलने देने का फैसला कोच व कप्तान पर होता है। इसमें एसोसिएशन का कोई रोल नहीं होता। रवि ने यह भी बोला है कि वह आरपीएल खेलेगा, अगर उसे अलाउ किया तो। उन्होंने कहा- ऐसा नहीं है कि रवि नाराज होकर गया हो।

18 अगस्त से आयरलैंड के खिलाफ टी-20 सीरीज खेलेगा भारत

तीनों मुकाबले मलाहाइड में होंगे; हार्दिक कर सकते हैं कप्तानी

क्रिकेट आयरलैंड ने भारत के खिलाफ तीन मैचों की टी-20 सीरीज का शेड्यूल जारी कर दिया है। वेस्टइंडीज दौरे के बाद टीम इंडिया आयरलैंड में टी-20 सीरीज खेलेगी। इस सीरीज की शुरुआत 18 अगस्त से होगी। तीनों टी-20 मुकाबले मलाहाइड में खेले जाएंगे। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (द्बष्टष्ट) ने मंगलवार को शेड्यूल की पुष्टि करते हुए इसे ट्वीट किया है। द्बष्टष्ट ने लिखा- कौन मलाहाइड पार्टी के लिए तैयार है? आयरलैंड अगस्त में तीन मैचों की टी-20 सीरीज के लिए भारत की मेजबानी करेगा। आयरलैंड से पहले टीम इंडिया जुलाई-अगस्त में वेस्टइंडीज का दौरा करेगी। भारतीय क्रिकेट टीम के वेस्टइंडीज दौरे का शेड्यूल जारी हो चुका है। 12 जुलाई को 2 टेस्ट की सीरीज का पहला मुकाबला खेला जाएगा। 27 जुलाई से 3 वनडे और 3 अगस्त से 5 टी-20 मैचों की सीरीज शुरू होगी। 13 अगस्त को 5वें टी-20 के साथ ही टीम इंडिया का वेस्टइंडीज दौरा खत्म होगा। टीम इंडिया आयरलैंड में आखिरी बार पिछले साल टी-20 सीरीज खेलने गई थी। तब 2 मैचों की सीरीज भारत ने हार्दिक पंडया के कप्तानी में 2-0 से जीती थी। टीम इंडिया और आयरलैंड के बीच अब तक दो टी-20 सीरीज खेली गई है। दोनों सीरीज भारत ने जीती हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (ब्ष्टष्टढ्ढ) ने वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट और वनडे सीरीज के लिए टीम का ऐलान कर दिया है, लेकिन टी-20 सीरीज के लिए टीम की घोषणा नहीं हुई है। वेस्टइंडीज और आयरलैंड दौरे के लिए टीम का ऐलान एक साथ कर सकता है। आयरलैंड के खिलाफ टीम की कप्तानी हार्दिक पंडया को सौंपी जा सकती है।

रेसलर्स Vs बृजभूषण सिंह

3 दिन में 1500 पन्नों की चार्जशीट पर स्टडी करेगा कोर्ट; 1 जुलाई को होगी सुनवाई

पानीपत। भारतीय कुश्ती संघ (ड्ढस्नढ्ढ) के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण पर 6 बालिग पहलवानों के यौन शोषण केस की मंगलवार को स्र्ॅ स्रू कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने सुनवाई करते हुए कहा कि अब इस मामले में 1 जुलाई से आरोप-पत्र पर बहस होगी, जिसके बाद कोर्ट आरोप-पत्र पर संज्ञान लेगा। अतिरिक्त मुख्य मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट हरजीत सिंह जसपाल ने कहा कि यह एक लंबा आरोप-पत्र है। जिसके बाद उन्होंने मामले में सुनवाई स्थगित कर दी। नया आरोप-पत्र दायर किया गया है। इस पर गौर करने दिया जाए। चूंकि यह एक लंबा आरोप-पत्र है, इसलिए इस पर कुछ दिन विचार करने दिया जाए। इन 3 दिनों में कोर्ट 1500 पन्नों की चार्जशीट पर स्टडी करेगा। पहलवानों ने इस मामले की जांच के लिए कोर्ट में याचिका दायर की थी, जिसमें उन्होंने कोर्ट की निगरानी में मामले की जांच कराने की मांग की थी। अब महिला पहलवानों ने इस याचिका को वापस लेने की मांग की है। इस पर कोर्ट ने कहा कि मामले में आरोप-पत्र दाखिल हो चुका है। ऐसे में जांच की निगरानी की मांग वाली याचिका का अब कोई औचित्य नहीं। कोर्ट ने पहलवनों के वकील से यह भी कहा, अगर आपको लगता है कि जांच की निगरानी की जरूरत है तो नई याचिका दाखिल कर सकते हैं। बता दें कि दिल्ली पुलिस की ओर से दाखिल 1500 पन्नों की चार्जशीट सुनवाई की गई है। दिल्ली पुलिस ने कुछ दिन पहले राउज एवेन्यू कोर्ट में चार्जशीट पेश की थी। आरोपियों में बृजभूषण के अलावा ड्ढस्नढ्ढ के असिस्टेंट सेक्रेटरी विनोद तोमर का नाम भी है। चार्जशीट में पहलवानों के मजिस्ट्रेट के सामने दिए गए बयान को अहम आधार माना गया है। बृजभूषण के खिलाफ करीब 7 गवाह मिले हैं। वहीं यौन शोषण की कथित जगह पर उनकी मौजूदगी के भी सबूत मिले हैं। चार्जशीट की पहली सुनवाई पर कोर्ट ने इसे स्र्ॅ स्रूकोर्ट में ट्रांसफर किया था। इसके अलावा, सोमवार को कोर्ट ने दिल्ली पुलिस को चार्जशीट की एक कॉपी शिकायतकर्ता पहलवानों को देने के आदेश दिए हैं। दिल्ली पुलिस के सूत्रों के मुताबिक, बृजभूषण पर जो रास्ता रोकने या पीछा करने का केस है, वह 2012 का है।

पाक बोर्ड बोला-सरकार से अभी भारत जाने की इजाजत नहीं

आईसीसी ने कहा- पाकिस्तानी टीम ने एग्रीमेंट साइन किया है, पलटना नहीं चाहिए

पाकिस्तान टीम आखिरी बार 2016 में टी-20 वर्ल्ड कप खेलने भारत आई थी। इस टूर्नामेंट में पाकिस्तान और इंडिया का मैच कोलकाता में हुआ था। ये मैच भारत ने 6 विकेट से जीता था। पाकिस्तान टीम आखिरी बार 2016 में टी-20 वर्ल्ड कप खेलने भारत आई थी। इस टूर्नामेंट में पाकिस्तान और इंडिया का मैच कोलकाता में हुआ था। ये मैच भारत ने 6 विकेट से जीता था। भारत में अक्टूबर-नवंबर के बीच होने वाले वनडे वर्ल्ड कप का शेड्यूल बुधवार को जारी हुआ। इसके बाद पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (क्कष्टक्च) ने वर्ल्ड कप में हिस्सा लेने पर बयान जारी किया। क्कष्टक्च ने कहा कि वर्ल्ड कप में हिस्सेदारी को लेकर अभी पाकिस्तान सरकार से इजाजत नहीं मिली है। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (द्बष्टष्ट) ने क्कष्टक्च के बयान पर जवाब दिया है। द्बष्टष्ट ने कहा कि क्कष्टक्च ने वर्ल्ड कप में हिस्सा लेने का एग्रीमेंट साइन किया है। हमें भरोसा है कि उनकी टीम इससे पलटेगी नहीं। नॉकआउट राउंड से पहले पाकिस्तान वर्ल्ड कप में 9 मैच खेलेगी। टूर्नामेंट का सबसे चर्चित मुकाबला यानी इंडिया-पाकिस्तान मैच 15 अक्टूबर को होना है। भारत में किसी भी दौरे के लिए क्कष्टक्च को पाकिस्तान सरकार की मंजूरी लेनी होती है। भारत में जिन जगहों पर मैच खेलना है, उसके लिए भी हमें इजाजत लेनी होती है। जहां तक वर्ल्ड कप की बात है, तो अभी तक हमें मंजूरी नहीं मिली है। हम लगातार सरकार के संपर्क में हैं ताकि हमें वर्ल्ड कप के लिए गाइडलाइन मिल सके। जैसे ही हमें सरकार से कोई निर्देश मिलता है। हम द्बष्टष्ट को उसके बारे में जानकारी देंगे। पाकिस्तान ने वर्ल्ड कप में हिस्सा लेने के लिए एग्रीमेंट साइन किया है। हम उम्मीद कर रहे हैं कि वो इस एग्रीमेंट से पलटेंगे नहीं और भारत आएंगे। वर्ल्ड कप में भाग ले रही सभी टीमें अपने देश के नियम और कानूनों से बंधी हैं और हम इसका सम्मान भी करते हैं। लेकिन हमें पूरा भरोसा है कि पाकिस्तान वर्ल्ड कप खेलने भारत जरूर आएगा। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि पाकिस्तान सरकार ने सुरक्षा कारणों को लेकर अभी तक क्कष्टक्च को वर्ल्ड कप में खेलने की इजाजत नहीं दी है।

एशेज...मैदान में घुसे प्रदर्शनकारी, बेयरस्टो ने उठाकर बाहर किया

अश्विन बोले- दूसरे टेस्ट से पहले ही बेयरस्टो कुछ भारी काम कर चुके हैं

लंदन के लॉर्ड्स मैदान पर चल रहे द एशेज सीरीज के दूसरे टेस्ट के दौरान हंगामा हो गया। इंग्लैंड-ऑस्ट्रेलिया के बीच चल रही सीरीज के दूसरे मुकाबले के पहले दिन ऑयल प्रोटेस्ट कर रहे 2 प्रदर्शनकारी मैदान पर घुस गए। जिसके कारण खेल थोड़ी देर के लिए रोकना पड़ा। इंग्लिश कप्तान बेन स्टोक्स ने प्रदर्शनकारियों को रोकने की नाकाम कोशिश की। बाद में विकेटकीपर जॉनी बेयरस्टो प्रदर्शनकारियों में से एक को कंधे पर उठाकर मैदान से बाहर करते नजर आए। भारतीय स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने इस पूरे मामले का वीडियो पोस्ट करते हुए सोशल मीडिया पर लिखा- %दूसरे टेस्ट का शानदार आगाज...बेयरस्टो पहले ही कुछ भारी काम कर चुके हैं। मैच के पहले दिन पहले ओवर के बाद ही प्रदर्शनकारी मैदान में घुस गए। लंदन के लॉर्ड्स मैदान पर बुधवार को द एशेज सीरीज का दूसरा टेस्ट शुरू हुआ। पहले सेशन में एक ओवर ही डला था कि ऑयल प्रोटेस्ट कर रहे 2 प्रदर्शनकारी मैदान पर घुस गए। कप्तान बेन स्टोक्स ने उन्हें रोकना चाहा, लेकिन प्रोटेस्टर नहीं रुके। ऐसे में इंग्लिश विकेटकीपर जॉनी बेयरस्टो ने एक प्रदर्शनकारी को कंधे पर उठाकर बाहर कर दिया, जबकि दूसरे को सिक्योरिटी ने बाहर पहुंचाया। दोनों प्रदर्शनकारियों ने जस्ट स्टॉप ऑयल टी-शर्ट पहन रखी थी। प्रदर्शनकारियों के हाथ में ऑरेंज कलर का पाउडर भी था। इसे उन्होंने बेयरस्टो पर फेंका जिसकी वजह से उनकी टीशर्ट भी खराब हो गई। घटना के बाद मेट्रोपॉलिटन पुलिस ने कहा कि घटना के बाद तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इससे पहले प्रदर्शनकारियों ने 1 जून को आयरलैंड के खिलाफ टेस्ट से पहले टीम की बस रोकी थी। यह टेस्ट भी लॉर्ड्स मैदान पर खेला गया था। यह खुलासा बेयरस्टो ने सोशल मीडिया पर किया था।

वर्ल्ड कप क्वालिफायर में श्रीलंका ने स्कॉटलैंड को हराया

82 रन से जीते, टेबल में टॉप पर फिनिश किया; अब सुपर सिक्स में जाएंगे

बुलवायो। वनडे वर्ल्ड कप 2023 के क्वालिफायर में मंगलवार को जिम्बाब्वे के बुलावायो में खेले गए मुकाबले में श्रीलंका ने स्कॉटलैंड को 82 रन से हराया। टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए श्रीलंका 49.3 पर 245 रन बना कर ऑलआउट हो गई। जवाब में स्कॉटलैंड 29 ओवर में 163 रन बना कर ऑलआउट हो गई। इस जीत के साथ ही क्वालिफायर राउंड में ग्रुप क्च की भी फाइनल स्टैंडिंग पक्की हो गई। ग्रुप क्च से श्रीलंका, स्कॉटलैंड और ओमान सुपर सिक्स में जाएंगे। वहीं ग्रुप- से जिम्बाब्वे, वेस्टइंडीज और नीदरलैंड खेलेंगे। ग्रुप- में जिम्बाब्वे के पास 8, वेस्टइंडीज के पास 4 और नीदरलैंड के 6 पॉइंट्स है। ग्रुप क्च में श्रीलंका 8 पॉइंट्स के साथ टॉप पर है। हर ग्रुप में 5 टीम है। इसमें से दोनों ग्रुप की टॉप 3 टीम के बीच सुपर 6 टेबल के मुकाबले होंगे। इसमें सब एक दूसरे के खिलाफ मैच खेलेंगे और फाइनल टेबल के टॉप 2 टीम क्वालिफाई होंगी। लेकिन, इसमें ग्रुप टेबल के पॉइंट्स के साथ टीम सुपर 6 में जाएगी। यानी अगर स्कॉटलैंड सुपर 6 में जाएगी तो उसके ओमान और श्रीलंका के खिलाफ खेले मैच के पॉइंट काउंट होंगे। स्कॉटलैंड ने टॉस जीत का रपहले बॉलिंग करने का फैसला किया। श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी की। पथुम निसांका और दिमुथ करुणारत्ने ने ओपनिंग की। करुणारत्ने 7 रन बना कर बोल्ड हो गए। इसके बाद कुसल मेंडिस भी 1 रन पर इवांस का शिकार बने। सदीरा समविक्रमा ने निसांका के साथ 55 पार्टनरशिप की और 26 रन बना कर आउट हुए। वहीं, निसांका 75 रन बना कर आउट हो गए। चरिथ असलंका ने 63 रन की पारी खेली और टीम को मजबूती दी। उनके अलावा धनञ्जय डी सिल्वे 23, कप्तान दासुन शनाका 0 और वानिंदु हसारंगा 15, महीश तीक्षणा 16 और कासुन रजिथा 1 रन बना कर आउट हुए। लाहिरु कुमार 5 रन बना कर नॉट आउट रहे। टीम 49.3 ओवर में 245 रन बना सकी। बॉलिंग में क्रिस ग्रीव्स ने शानदार प्रदर्शन किया उन्होंने 4 विकेट लिए। वहीं मार्क वाट ने 3, क्रिस सोल ने 2 और अलसदेर इवांस को एक सफलता मिली।

प्लेयर ऑफ द मैच: महीश तीक्षणा
बॉलिंग : विकेट 3/41 | बैटिंग: 16* (21)

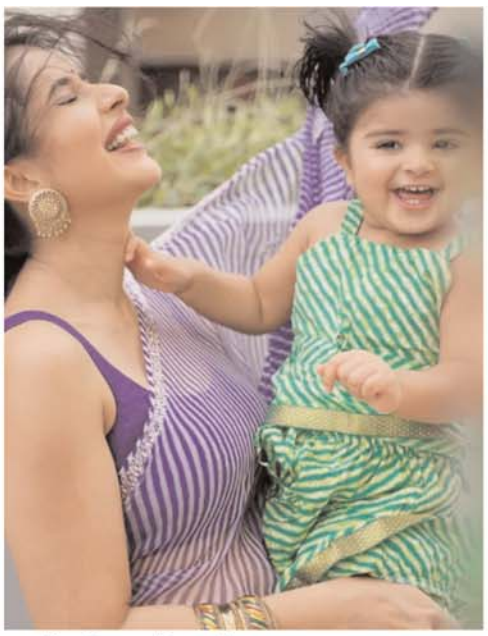

बेटी को छोड़कर काम पर जाने पर छलका चारु असोपा का दर्द

टीवी एक्ट्रेस चारू असोपा पिछले काफी समय से सुर्खियों में बनी हुई हैं. हाल ही में चारू ने अपने पति राजीव सेन से तलाक लिया है, जिसके बाद अब वह अपने काम पर वापस लौट गई है. एक्ट्रेस ने अपने टीवी शो की शूटिंग एक बार फिर शुरू कर दी है। टीवी एक्ट्रेस चारू असोपा पिछले काफी समय से सुर्खियों में बनी हुई हैं. हाल ही में चारू ने अपने पति राजीव सेन से तलाक लिया है, जिसके बाद अब वह अपने काम पर वापस लौट गई है. एक्ट्रेस ने अपने टीवी शो 'कैसा है ये रिश्ता अंजाना' की शूटिंग शुरू कर दी है, जिसमें वह वैंप का किरदार निभाएंगी। बता दें कि, वीडियो की शुरुआत में देखा जा सकता है कि चारू अपनी बेटी को गोद में लिए दूध पिला रही होती है, जिसके बाद सेट पर जाते समय एक्ट्रेस अपने फैंस से कहती हैं, 'मैं अपने शूट के पहले दिन के लिए जा रही हूं. मैं एक्साइटेड तो हूं पर घबराई भी हूं. पहले की बात अलग थी. मैं बहुत खुश हुआ करती थी लेकिन अब ये एक मिक्सड फिलिंग है क्योंकि मुझे ज़ियाना को छोड़कर जाना पड़ रहा है. जब मैं चली गई तो वो सो रही थी. हालांकि मुझे इस बात से ज्यादा हैरानी होती है कि मैं उससे दूर कैसे रहूंगी। इसके आगे वह कहती हैं, 'हो सकता है कि वह मुझे उतना याद न करती हो लेकिन मैं यकीनन उसे याद करती हूं. जब मैं उससे दूर जाती हूं तो उसके बारे में ही सोचती रहती हूं. उसके फोटो व वीडियो देखती हूं. मैं उसमें इतना डूब गई हूं कि उससे दूर रहना मेरे लिए मुश्किल हो रहा है लेकिन मैं शूटिंग के लिए बाहर हूं जो एक ब्लेसिंग भी है. हर किसी को मौका नहीं मिलता. इसलिए मैं अपना 100 परसेंट जरूर दूंगी। हालांकि इसी के साथ चारु ने जियाना की देखभाल के लिए अपने एक्स हसबैंड राजीव से भी मदद मांगी हैं क्योंकि अब वह एक नए टीवी शो में काम कर रही है तो वह वहां आज ज़ियाना को अपने साथ नहीं ले जा सकती. एक्ट्रेस आगे कहती हैं, ÷मैंने आज राजीव से जियाना के साथ रहने की रिक्वेस्ट की है क्योंकि मुझे वहां के अरेंजमेंट्स, लोकेशन और कमरों के बारे में पता नहीं है. कल से मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगी। इसके आगे उन्होंने बताया कि, 'प्रोडक्शन हाउस ने उनसे कहा है कि शुरुआत में उन्हें अपना रूम शेयर करना होगा. बजट की कमी के कारण वह सभी को अलग-अलग कमरे नहीं दे पाएंगे लेकिन मैंने उनसे कहा है कि ज़ियाना की वजह से मुझे एक कमरे की जरूरत होगी, ताकि मैं उसे उसके खिलौने और मैट के साथ वहां छोड़ सकूं क्योंकि ये एक डेली सोप है और एक दिन का मामला नहीं है। वीडियों में चारू ने अपना लुक भी रिवील किया. उन्होंने बहुत ही लाउड मेकअप करवाया है क्योंकि वह कोमोलिका की तर्ज पर एक नेगेटिव रोल अदा कर रही हैं. व्लॉग के आखिर में एक्ट्रेस बताती है कि बारिश की वजह से वह जियाना के पास नहीं जा पा रही है. मौसम की वजह से वो सेट पर ही फंस गई है. ये कहते ही वह फूट-फूट कर रोने लगी। चारू ने कहा, ÷मैंने पहले भी कई बार बारिश में शूटिंग की है लेकिन मुझे कभी इतनी चिंता महसूस नहीं हुई. बारिश के साथ-साथ अब अंधेरा भी हो रहा है.÷ इसके आगे वह कहती हैं, 'मुझे पता है कि राजीव उसके साथ हैं लेकिन एक मां के तौर पर ये बहुत परेशान करने वाला है. मैं नहीं जानती कि इसे कैसे बयां करूं लेकिन यह डरावना है. मैं सभी मांओं को सलाम करती हूं।

दिलों को छूते थे शाद के किरदार

पंजाबी सिनेमा को अपने अस्तित्व के तीन दशक बाद हरविंदर सिंह उर्फ़ बूटा सिंह 'शाद' के रूप में प्रथम सिख हीरो मिला था। बराड़ प्रोडक्शंस, बॉम्बे की फिल्म 'कुल्ही यार दी' (1969), उनके उपन्यास %अधी रात पहर दा तड़का% पर आधारित थी। इस फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर शानदार रिस्पॉन्स मिला और उन्होंने फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनकी अधिकतर फिल्में ¯ कोरा बदन (1974), मित्तर प्यारे नूं (1975) और लाली (1998) स्व-रचित साहित्यिक कृतियों पर केंद्रित थीं। बूटा सिंह 'शाद' एक निर्भीक शख्सियत थे। उनके अनुभवों से जो भी सपने उभरे, वे कालांतर उनकी साहित्यिक रचनाओं और फिल्मों में प्रतिबिंबित हुए।

'नव्या' फेम सौम्या सेठ 33 की उम्र में बनी दूसरी बार दुल्हन

नए धड़कन नए सवाल' फेम एक्ट्रेस सौम्या सेठ यानी नव्या एक बार फिर शादी के बंधन में बंध गई हैं। उन्होंने अपने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड शुभम चूहाड़िया के साथ सात फेरे लिए हैं। स्टार प्लस के टीवी शो 'नव्या¯ नए धड़कन नए सवाल' फेम एक्ट्रेस सौम्या सेठ यानी नव्या एक बार फिर शादी के बंधन में बंध गई हैं। 33 की उम्र में सौम्या ने अपने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड शुभम चूहाड़िया के साथ सात फेरे लिए हैं। कपल ने अमेरिका में काफी प्राइवेट तरीके से क्रिश्चिन वेडिंग की, जिसमें केवल उनके करीबी दोस्त और परिवार वाले ही शामिल हुए। बता दें कि, गोविंदा की भांजी सौम्या की पहली शादी अरुण कपूर से हुई थी, जिससे उनका एक बेटा भी है। बीते 5 सालों से वह अपने बेटे आयडेन के साथ अमेरिका में ही रह रही हैं। अमेरिका में ही उनकी मुलाकात शुभम चित्तौड़गढ़ से हुई, जो यूएस बेस्ड एक आर्किटेक्ट और डिजाइनर हैं। सौम्या शुभम से पहली बार तब मिली, जब उन्होंने उनके अपार्टमेंट में एक कमरा किराए पर लिया और इसके बाद महामारी के दौरान वह दोनों एक दूसरे के करीब आ गए। सौम्या ने शुभम के साथ 22 जून को शादी की। अपनी शादी की खुशी शेयर करते हुए सौम्या ने कहा, ÷हमने अपने पेरेंट्स को एक दिन 21 जून दिया, जिसमें हम दोनों जो भी वे चाहते थे उसे करने के लिए सहमत हुए। इसलिए उन्होंने हल्दी-मेहंदी की और अगले दिन 22 जून को हम इसे अपने तरीके से कर रहे थे। हालांकि शादी में कोई गेस्ट नहीं थे बस हमारी लाइफ के सबसे अहम लोग जैसे कि हमारे फैमिली मेंबर्स और कुछ खास दोस्तों को शादी में इनवाइट किया गया था।

'गुम है किसी के प्यार में' की एक्ट्रेस तन्वी ठक्कर बनी मां

'गुम है किसी के प्यार में' फेम एक्ट्रेस तन्वी ठक्कर और उनके पति आदित्य कपाड़िया पेरेंट्स बन गए हैं। तन्वी ने बेटे को जन्म दिया है, जिसकी खुशी से ये कपल फूले नहीं समा रहे हैं। मॉम एंड डैड बनने की खुशी कपल ने अपने फैंस के साथ शेयर की है। बता दें कि, तन्वी ठक्कर ने 19 जून को बेटे को जन्म दिया। एक्ट्रेस ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर न्यू बॉर्न बेबी बॉय के साथ अपनी एक प्यारी सी तस्वीर भी साझा की हैं। साथ ही इस फोटो के कैप्शन में लिखा, ÷सब कुछ यहीं से शुरू होता है। एक्ट्रेस के मां बनने की खबर मिलते ही उनके फैंस के साथ-साथ कई सेलेब्स भी उनको बधाई दे रहे हैं। अभिनेत्री किश्वर मर्चेंट ने तनवी और आदित्य कपाड़िया को बधाई देते हुए लिखा, आप लोगों को बधाई।

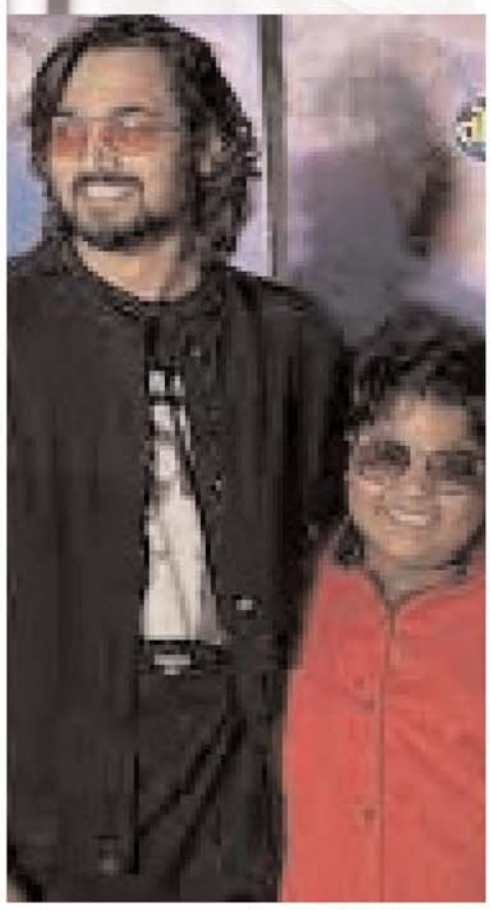

'बुरा लगता है भाई' फेम यूट्यूबर देवराज पटेल का 22 की उम्र में निधन

छत्तीसगढ़ के मशहूर यूट्यूब और 'बुरा लगता है भाईज' वीडियो से फेमस हुए कॉमेडियन देवराज पटेल का निधन हो गया हैं। 26 जून को एक एक्सीडेंट में उनकी मौत हो गई। 22 साल के देवराज महासमुंद जिले के रहने वाले थे। वह अपनी 'भाई दिल से बुरा लगता है' वीडियो से फेमस हुए थे। इस वीडियो के वायरल होने के बाद देवराज के चाहने वालों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई थी, जिसके बाद वह राज्य के सीएम भूपेश बघेल से भी मिले थे। बता दें कि, देवराज रायपुर के पास नेशनल हाइवे पर अपनी बाइक से अपने एक दोस्त के साथ कहीं जा रहे थे। जहां पीछे से आ रहे एक अनियंत्रित ट्रक ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी, जिसमें देवराज की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं उसका दोस्त गंभीर रूप से घायल हुआ है, जिसे तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया।

रवि किशनकी बेटी ईशिता करेंगी देश की सेवा, 21 साल की उम्र में डिफेंस ज्वाइन करने का ठाना

भोजपुरी इंडस्ट्री के स्टार और बीजेपी सांसद रवि किशन एक बार फिर सुर्खियों में हैं। हालांकि इस बार वह अपने किसी बयान के चलते चर्चा में नहीं आए है, बल्कि इस बार वह अपनी बेटी की सफलता की वजह से खुश हैं। दरअसल एक्टर की बेटी ईशिता शुक्ला मात्र 21 साल की उम्र में डिफेंस ज्वाइन करने वाली हैं। इस खबर को सुनने के बाद अभिनेता के फैंस खुश है और उन्हें बधाई दे रहे हैं। बता दें कि, ईशिता शुक्ला के डिफेंस ज्वाइन करने की जानकारी किसी और ने नहीं बल्कि सेलिब्रिटी फोटोग्राफर वरिंदर चावला ने दी हैं। वरिंदर ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर की है, जिसमें एक तरफ रवि किशन और उनकी बेटी की साथ में सेल्फी की फोटो है। वहीं दूसरी तरफ ईशिता की। इस फोटो को शेयर करते हुए उन्होंने लिखा, 'भोजपुरी अभिनेता रवि किशन की 21 साल की बेटी ईशिता शुक्ला अग्निपथ योजना के तहत रक्षा बलों में शामिल होंगी। इस साल गणतंत्र दिवस की परेड में भी ईशिता शुक्ला ने भाग लिया था, जिसकी खुशी रवि किशन ने एक ट्वीट कर जाहिर की थी।

विवादों में घिरी कार्तिक-कियारा की फिल्म

बॉलीवुड एक्टर कार्तिक आर्यन और एक्ट्रेस कियारा आडवाणी इन दिनों अपनी आगामी फिल्म %सत्य प्रेम की कथा% के चलते सुर्खियों में बने हुए हैं। हालांकि अब रिलीज से पहले ही ये मूवी विवादों में फंस गई है। बॉलीवुड एक्टर कार्तिक आर्यन और एक्ट्रेस कियारा आडवाणी इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'सत्य प्रेम की कथा' के चलते सुर्खियों में बने हुए हैं। एक बार फिर कियारा और कार्तिक की जोड़ी बड़े पर्द पर धमाल मचाने को पूरी तरह से तैयार है। जब से इस फिल्म का ट्रेलर जारी किया गया है तभी से फैंस इसको देखने के लिए एक्साइटेड हैं, लेकिन अब रिलीज से पहले ही ये मूवी विवादों में फंस गई है। दरअसल, इस बार फिल्म के किसी सीन को लेकर नहीं बल्कि एक नए गाने को लेकर विवाद हो रहा है।

राधिका को हिट फिल्म की तलाश

किसी भी माध्यम के प्रोजेक्ट में एंट्री लेना अभिनेत्री राधिका आप्टे को बखूबी आता है। कभी टीवी शो तो कभी वेब सीरीज। कुछ नहीं हुआ तो थियेटर के किसी प्रोजेक्ट को लेकर उन्हें व्यस्त देखा जा सकता है। फिल्में तो हमेशा इस तारिका का एक सशक्त मीडियम रहा है। उनकी मुश्किल यह है कि लगातार फ्लाप फिल्मों ने उन्हें शिथिल कर दिया है। खास तौर से दो माह पहले रिलीज %विक्रम वेदा% के न चलने से वह अब तक बेचैन हैं। लिहाजा अब वह किसी हिट फिल्म की तलाश कर रही हैं। वह अब खुद कुछ बड़े निर्देशकों से संपर्क कर रही हैं।

कंगना के हालात : पिछले दो साल में अभिनेत्री कंगना रनौत का जो स्टारडम बना था,वह अब लगभग ढलान पर है। कंगना की हालत भी अब अनुष्का व दीपिका आदि की तरह हो चुकी है। स्टारडम पाते ही जो शोशेबाजी तारिकाएं शुरू करती थीं,कंगना ने भी उसी रास्ते को पकड़ा है। अब आधा दर्जन फ्लाप फिल्मों के बाद वह लगातार संभलने की कोशिश कर रही हैं,पर उनके लिए स्वर्णकाल जैसी बात अब नहीं रही। वैसे कंगना के पास अब भी तीन-चार फिल्में हैं। मगर ज्यादातर बड़े निर्देशक उनके साथ काम करने से बच रहे हैं।

महिला शांति सेना के द्वारा चल रहे समर कैंप का समापन हुआ

महिला शांति सेना के द्वारा द्वारकाधीश कॉलोनी में चल रहे सिलाई कढ़ाई बुनाई पार्लर एवं मेहंदी का गरीब बच्चियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 8 मई मदर्स डे से शुभ आरंभ होकर आज 29 जून को समापन थाटीपुर स्थित कबीर आश्रम ने हुआ समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मुन्ना लाल गोयल जी मध्य प्रदेश बीज निगम के अध्यक्ष रहे

विशिष्ट अतिथि मर्चेंट नेवी इंजीनियर आदेश गुप्ता जी रहे कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था चार्टर संरक्षिका मेजर आशा माथुर जी ने किया कार्यक्रम में संस्था की मुख्य रूप से चार्टर संरक्षिका डॉ रमेश शर्मा अध्यक्ष इंदिरा मंगल मीना शर्मा शामिल रहे प्रशिक्षण देने वाली बच्ची नारायण वृद्ध आश्रम के द्वारा सामूहिक विवाह के द्वारा विवाह होकर थाटीपुर स्थित द्वारकाधीश कॉलोनी आई है इस बच्ची ने नारायण वृद्ध आश्रम ग्रीष्मकालीन कैंप के माध्यम से ही सिलाई कढ़ाई बुनाई का प्रशिक्षण लिया वह निपुण होकर सिखाने लगी आज उसने 50 -60 बच्चियों को निशुल्क सिलाई कढ़ाई बुनाई पार्लर एवं मेहंदी के कोर्स का प्रशिक्षण देकर उनको आत्मनिर्भर बनाया है . प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली सभी बच्चियों को प्रमाण पत्र महिला शांति सेना के द्वारा दिए गए और सिलाई में उत्कृष्ट बच्ची *दिव्यांशी सुमन* बहुत अच्छी सिलाई स्टिचिंग दी थी उसकी फाइल बहुत सुंदर थी बहुत अच्छा सिलाई का कार्य किया था सिलाई मशीन दी गई अन्य बच्चियों को सेकंड और थर्ड को आशु अली और शिवानी पांडे को शील्ड दी गई इसके अतिरिक्त पार्लर एवं मेहंदी में जिसने बहुत अच्छा कार्य किया खुशबू जाटव खुशी ,शाक्य गिरजा अग्रवाल, मेहंदी में निपुण रही इनको शील्ड देकर सम्मानित किया गया और प्रमाण पत्र दिए गए पार्लर में उपमा सोलंकी, रीना अग्रवाल ,बेबी नरवरिया, निपुण रही इनको भी शील्ड से सम्मानित किया गया और प्रमाण पत्र दिए गए इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण देने वाली दीपा कुशवाहा को भी संस्था की तरफ से **प्रशंसा पत्र *दिया गया7

मुख्य अतिथि मुन्नालाल गोयल ने बच्चों को उत्साहवर्धन करते हुए कहा कल आने वाले समय में आपके हाथों में देश की बागडोर होगी इन्हीं में से कोई बच्चा वकील साइंटिस्ट इंजीनियर डॉक्टर एवं देश की बागडोर संभालने वाला प्रधानमंत्री राष्ट्रपति होगा आप लगन व मेहनत से कार्य करते चले जाएं लक्ष्य पर टिके रहे तो आप में से ही कोई ना कोई बच्चा और उच्च पद पर आसीन होता है विशिष्ट अतिथि आदेश गुप्ता जी ने बच्चों के सराहनीय कार्य के लिए ढेर सारा आशीर्वाद दिया और अपने कार्य को लगातार करते रहने के लिए कहा अध्यक्ष इंदिरा मंगल के लग्न उत्साह और कर्मठता की हौसला अफजाई की इस तरह संस्था की अध्यक्ष पद पर रहते हुए जो जिम्मेदारी निभा रहे हैं इसी तरह से आगे भी निभाते रहे शिक्षा देने वाली दीपा कुशवाहा को भी बहुत सराहनीय कार्य करते रहने के लिए बहुत सारा आशीर्वाद दिया अपने कार्य में इसी तरह से आगे बढ़ती जाए। संस्था की अध्यक्ष मेजर आशा माथुर ने भी बच्चों को आशीर्वाद दिया और हर तरह से आगे भी मदद करने के लिए तत्पर रहेंगे हमारी संस्था बच्चों को कहा बच्चों ने बहुत सुंदर सुंदर प्रस्तुति दी देशभक्ति गीत प्रस्तुत किया। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर छोटा सा नाटक किया । अध्यक्ष इंदिरा मंगल ने कार्यक्रम का संचालन किया आभार मीना शर्मा जी ने किया कार्यक्रम में संस्था की शालिनी रोहिणी ज्वाइन कर चित्र एवं अन्य महिला शांति सेना के सदस्य गण उपस्थित रहे और प्रशिक्षण प्राप्ति स्थल पर काफी संख्या में बच्चे एवं उनके अभिभावक उपस्थित रहे7

जेके टायर के बानमोर प्लांट की क्षमता विस्तार के पहले चरण का उद्घाटन

बानमोर/ग्वालियर7 भारतीय टायर उद्योग की प्रमुख कंपनी और रेडियल टायर सेगमेंट में मार्केट लीडर जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने मध्य प्रदेश के बानमोर में स्थित अपनी मैन्युफैक्चर फैसेलिटी के क्षमता विस्तार के पहले चरण के पूरा होने की घोषणा की है। इसका शुभारंभ मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर और केंद्रीय नागरिक उड्डयन व इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की उपस्थिति में किया गया। लगभग 1000 करोड़ रुपए के निवेश के साथ कंपनी ने पैसेंजर कार रेडियल (पीसीआर) टायरों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए अपनी मौजूदा बानमोर मैन्युफैक्चर फैसेलिटी में दो-चरणीय विस्तार की योजना बनाई है। पहले चरण के विस्तार में 312 करोड़ रुपये का निवेश शामिल था। इस विस्तार से प्लांट की वार्षिक उत्पादन क्षमता 31न बढ़कर 39 लाख से 51 लाख यूनिट प्रति वर्ष हो जाएगी। जेके टायर अब विस्तार के दूसरे चरण में है, इसमें 617 करोड़ रुपए के अतिरिक्त निवेश के साथ अप्रैल 2024 तक

क्षमता 31न अतिरिक्त बढ़ जाएगी। इस अवसर पर बोलते हुए जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा, %इस मेन्युफेक्चरिंग फैसेलिटी का विस्तार इनोवेशन, सस्टेनेबिलिटी के प्रति हमारे अटूट समर्पण और मध्य प्रदेश के विकास की कहानी में हमारे महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है। जैसा कि भारत %अमृतकाल% में प्रवेश कर गया है, यह एक आधुनिक, विकसित लोकतंत्र के रूप में देश की शताब्दी की ओर अगले 25 साल की यात्रा है। जेके टायर में भी इस विकास को हम एक स्ट्रेटेजिक कदम मानते हैं। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि क्षेत्रीय समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ रही है। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारे ग्राहकों की मांगों को पूरा करने के लिए हमारे उत्पाद के साथ-साथ हमारी उत्पादन और विनिर्माण क्षमताएं भी लगातार विकसित हो रही हैं।उन्होंने कहा, मध्य प्रदेश सरकार और स्थानीय प्रशासन ने हमें अपना अटूट समर्थन दिया है, जिसके लिए हम उनके दिल से आभारी है। हम पूरे देश के लिए एक विश्वसनीय मोबिलिटी पार्टनर बनने के अपने मिशन में जुटे रहेंगे।% पिछले कुछ वर्षों में, 211 एकड़ की यह फैसेलिटी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में उभरी है, जो क्षेत्र में औद्योगीकरण को बढ़ावा दे रही है और राज्य में लगभग 15,000 व्यक्तियों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा कर रही है। इस विस्तार से क्षेत्र में 7,000 से अधिक लोगों के लिए अतिरिक्त रोजगार पैदा होगा,

ग्वालियर में आप का चुनावी आगाज 1 जुलाई को, केजरीवाल-मान करेंगे रैली

ग्वालियर। ग्वालियर अंचल में आम आदमी पार्टी का चुनावी आगाज एक जुलाई को होगा। इस दिन दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदर्मी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल एवं पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान मेला मैदान में एक महारैली करेंगे। इससे पहले उनका रोड शो भी हो सकता है।आप की प्रदेशाध्यक्षा एवं सिंगरौली महापौर रानी अग्रवाल ने बताया कि आम आदमी पार्टी मध्यप्रदेश में पूरे दमखम से चुनाव ल?गी। चुनाव के प्रचार अभियान का आगाज ग्वालियर चंबल अंचल से हो रहा है। यहां दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदर्मी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल एवं पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान की एक ब?ी आम सभा होगी। इसमें लगभग एक लाख लोगों के आने की संभावना है। श्रीमती अग्रवाल ने बताया कि आप चुनाव में मुद्दों को लेकर जनता के बीच जा रही है। भाजपा की खरीद फरोख्त की राजनीति का अब अंत समय आ गया है। मध्यप्रदेश की जनता आप की राजनीति को पसंद कर रही है। आप के प्रदेश प्रभारी बीएस जून के अनुसार भाजपा और कांग्रेस दोनों आपस में मिली हुई है। लेकिन अब प्रदेशवासियों के सामने आप विकल्प बनकर ख?ी है, जो लोगों की उम्मीदों को पूरा करने का दम रखती है। पत्रकारवार्ता में ग्वालियर चंबल जोर प्रभारी विधायक शेरी कलसी, रीवा जोन प्रभारी दिनेश चड्ढा, इंदौर जोर प्रभारी विधायक मनजिंदर सिंह लाल, महिला विंग प्रदेशाध्यक्ष मनीक्षा सिंह तोमर, प्रदेश उपाध्यक्ष रूचि गुप्ता, प्रदेश सचिव रोहित गुप्ता, प्रदेश सहसचिव शैलेन्द्र भदौरिया, ग्रामीण जिलाध्यक्ष सुमित पाल, ओबीसी ग्रामीण जिलाध्यक्ष मोहन पाल, जिला मीडिया प्रभारी संजय सिंह देहलवार, रवि जादौन भी उपस्थित थे।

हमारी पहचान निरंतर विकास और गरीब कल्याण: शेजवलकर

ग्वालियर। पिछले 9 वर्षों से देश में एक निर्णायक और लोक कल्याणकारी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही सरकार के कारण आज जब भारत के भीतर से लेकर विश्व पटल पर देश की समृद्धि, सशक्तिकरण, समरसता, सुशासन और संस्कारों का डंका बज रहा है, तब प्रधानमंत्री इच्छा के अनुरूप मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार ने भी अपने प्रदेश को हर मोर्चे पर अव्वल बनाने के लिए भरसक प्रयत्न किए हैं। हमारी पहचान निरंतर विकास और गरीब कल्याण है। यह बात ग्वालियर सांसद विवेक नारायण शेजवलकर ने मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की केंद्र सरकार के सफलतम गौरवशाली 9 वर्ष पूर्ण होने पर गुरुवार को वार्ड 52 में पार्षद प्रत्याशी अनिल चौधरी के साथ महा-जनसंपर्क अभियान के अंतर्गत बूथ क्रमांक 237, 242 में फौजी कॉलोनी, नादरिया माता रोड, एकता विहार कॉलोनी, गुडा-गुडी का नाका क्षेत्र में घर-घर में जनसंपर्क कर भाजपा के लिए जनसमर्थन जुटाते हुए कहीं। सांसद शेजवलकर ने कहा प्रधानमंत्री मोदी की अनुकंपा से आज प्रदेश के विकास और प्रदेशवासियों के कल्याण के लिए भारत सरकार ने खजाने के द्वार खोल रखे हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में अधोसंरचना विकास, गरीब कल्याण और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की दिशा में मध्यप्रदेश आज गौरव के बिन्दु पर स्थापित है। हमारी केन्द्र और राज्य सरकारों के प्रयास हैं कि मध्यप्रदेश का कोई भी नागरिक सम्मान, संसाधन और सुशासन से वंचित नहीं रहना चाहिए। गरीब कल्याण और विकास की इस तड़प ने प्रदेशवासियों के लिए योजनाओं की झड़ी लगा दी है। बच्चे, युवा, बेटियां, महिलाएं हों या फिर बुजुर्ग, सभी को आज यह अनुभूति होती है कि भाजपा की सरकार, उनकी सरकार है। सपनों को पूरा करने के संकल्पों के साथ लोक कल्याण की यह यात्रा निरंतर जारी है। इस अवसर पर ग्वालियर सांसद विवेक नारायण शेजवलकर , पूर्व महापौर समीक्षा गुप्ता, वार्ड 52 पार्षद प्रत्याशी अनिल चौधरी, शक्ति केंद्र संयोजक शुभम चौधरी, शैलेंद्र तोमर, अंशुल गोस्वामी सहित वार्ड 52 के सभी 27 बूथों के अध्यक्ष, वार्ड के सभी ज्येष्ठ-श्रेष्ठ कार्यकता व पार्टी समर्थक उपस्थित रहे।

पूर्व महापौर समीक्षा गुप्ता ने कहा महिलाओं और बहनों को आर्थिक व सामाजिक समरसता के रूप में सशक्त बनाने के लिए शिवराज सरकार ने लाडली बहना योजना शुरू की है। जिसके तहत बहनों को प्रतिमाह 1 हजार रूपये देने का क्रांतिकारी निर्णय लिया गया है। बेटियां अब वरदान बन चुकी है। नारी शक्ति आसमान छू रही है। पूर्व जिला अध्यक्ष कमल मखीजानी ने कहा देश, प्रदेश और ग्वालियर में सांस्कृतिक वैभव को अब सम्मान मिल रहा है। धर्म स्तर संवर रहे हैं। उज्जैन में श्री महाकाल लोक, ओरछा में रामराजा लोक, चित्रकूट में दिव्य वनवासी राम लोक, दतिया में श्री-देवी लोक का निर्माण कार्य जारी है। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत हवाई जहाज से तीर्थ यात्रा कराने वाला मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य बन गया है। अब गरीबों को बराबरी के अधिकार मिल रहे हैं। उनके सपने साकार हो रहे हैं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि में मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के 6 हजार मिलाकर किसानों को 12 हजार सालाना सम्मान निधि मिल रही है। पिछले 3 वर्षों में 2 लाख 41 हजार करोड रुपए से अधिक की राशि किसानों के खातों में पहुंची है। आज अन्नदाता की आय बढ़ी है। खेती लाभ का व्यवसाय बन गया है।

वार्ड 52 प्रत्याशी प्रतिनिधि शुभम चौधरी ने कहा कांग्रेस की सरकार के समय 2002-3 में मध्यप्रदेश का बजट 23 हजार 161 करोड रुपए होता था। अब वर्ष 2023-24 में यह बढ़कर 3 लाख 14 हजार 25 करोड हो गया है। भाजपा की सरकार में समृद्धि के नए द्वार खुल रहे हैं। प्रदेश में निवेश और रोजगार बड़ा है। मुख्यमंत्री सीखो कमाओ योजना का शुभारंभ किया गया है। युवाओं को रोजगार के लिए कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। उन्हें 8-10 हजार स्टाइपेंड मिल रहा है। नई युवा नीति आने से सीखने के साथ कमाई के नए आयाम उत्पन्न हुए हैं। विगत 3 वर्षों में 20 हजार 500 से अधिक मेडिकल एवं पैरामेडिकल स्टाफ की भर्ती की गई है। 700 से अधिक स्वास्थ्य संस्थाओं की स्थापना और 2 हजार 620 स्वास्थ्य संस्थाओं का उन्नयन किया गया है। लगभग 600 करोड रुपए की लागत से 715 संस्थाओं का भवन निर्माण पूर्ण हुआ है। अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या 21 हजार 234 से बढ़कर 42 हजार 911 हुई है। वही आईसीयू बेड की संख्या 277 से बढ़कर 2 हजार 85 हो गई है। भारतीय जनता पार्टी की केंद्र और राज्य की सरकार ने जनता जनार्दन के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार से लेकर हर क्षेत्र में हर वर्ग के लिए जन कल्याणकारी योजनाएं बनाई है। जिसका जनता जनार्दन को भरपूर लाभ मिल रहा है। और यदि किसी को नहीं मिल पा रहा है तो उनको लेना चाहिए। मोदी और शिवराज सरकार ने हर वर्ग की चिंता की है। जनता-जनार्दन का भी कर्तव्य है वह मोदी और शिवराज सरकार की चिंता कर केंद्र और राज्य में पूर्ण बहुमत की सरकार बनवाये।

उपलब्ध हैं।
फाइनेंस / लोन / होम लोन
ग्वालियर मुरैना बामोर गोहद मालनपुर डबरा इत्यादि जगह में आप मकान खरीदने ओर प्लॉट खरीद कर मकान बनाने के लिए लोन के हैं जरुरत तो करें हमसे संपर्क।
संपर्क करें
07974596469

प्रो. अमित श्री हनुमते नमः प्रो. दीपक
मो. 7772843302 9617243208 मो. 9639422665 7024015532
जय दंदरौआ सरकार इन्टरप्राइजेज
डिस्पोजल
दोना पत्तल, डिस्पोजल प्लेट, ग्लास, पत्ते वाली पत्तल, दोने निर्माता एवं थोक विक्रेता
शादी, पार्टी एवं अन्य शुभ कार्यो आदि में सभी सामान फैक्ट्री रेट पर उपलब्ध है

पुष्पांजली टुडे
आम सूचना / कोर्ट नोटिस
साइज फिक्स रूपये
8×4 cm 1120
10×4 cm 1400
12×4 cm 1680
अन्य साइज 50/- sq.cm.
बुकिंग के लिए संपर्क करें
0751-4050784
8269307478

पुष्पांजली टुडे
गुमशुदा / खोया -पाया
नाम परिवर्तन
साइज फिक्स रूपये
8×4 cm 1050
अन्य साइज 50/- sq.cm.
बुकिंग के लिए संपर्क करें
0751-4050784
8269307478

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478